श्री जगन्नाथमाहात्म्य सटीक ॥

जिसको

बारहबंकीप्रदेशान्तर्गत पुरनियाग्रामनिवासि पण्डित गणेशदत्तजीने सकललोकहितार्थ बड़े परिश्रमसे श्लोकों में बनाया और उन्नामप्रदेशान्तर्गत गोमापुरग्राम निवासि तच्छिष्य पण्डित महेशदत्तजी के द्वारा प्रकाशित हुआ ॥

उसे

सकललोकहितैषी जानकर बड़ी रुचि से श्रीमन्मुन्शी नवलकिशोर जीने निजव्यय से उन्नामप्रदेशान्तर्गत तारगांवनिवासि पण्डित रामविहारी सुकुलसे देव नागरी में उल्था कराया ॥

तीसरीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा।

जुलाई सन् १९०७ ई०



जगन्नाथमाहात्म्य

भाषाटीकासहित ॥

अथ जगन्नाथव्रतकथाविधिः ॥

तत्रादौव्रतीप्रातर्मध्याह्नेकृतनित्यक्रियो ब्राह्मणैःस्वज्ञातिभिश्च परिवृतोयथाशक्त्यु पचारेणश्रीजगन्नाथंप्रपूजयेत् तत्रादौसंक ल्पंकुर्य्यात् ॐतत्सदद्येहेत्यादि अमुकगोत्रः

अथ जगन्नाथव्रतकथाविधि ॥

तहां पहले व्रत करनेवाला पुरुष प्रातःकाल और मध्याह्नकाल में नित्यका पूजनकर ब्राह्मण और अपने भाइयों संयुक्त यथाशक्ति सामग्री से श्रीजगन्नाथजी का

अमुकशर्म्मा अमुकनामकः आत्मनोमनो वाञ्छितफलप्राप्तिकामः श्रीजगन्नाथप्रीति कामोवाऽनयासम्पादितसामग्र्या गणेश गौरी वरुणदेवतागणपत्यादि पञ्चलोकपाल दशदिक्पालनवग्रहदेवतापूजनं पूर्वाङ्गीकृत्य श्रीजगन्नाथपूजनपूर्वककथाश्रवणमहं करिष्ये इतिमहासंकल्पः तदनन्तरंगणेशा दींस्तत्तन्मन्त्रैः सम्पूज्यच अथ गोधूमचूर्णै श्चतुष्कोणंकृत्वा तन्मध्येशोभनपीठंसंस्थाप्य तत्पीठोपरि नवीनंजगन्नाथस्यपटं स्थापयित्वा पटाभावेतुकुङ्कुमरक्तचन्दनेनैव श्रीजगन्नाथस्यप्रतिमांलेखयित्वा तदग्रेक

पूजनकरै तिस में प्रथम सङ्कल्पकरै तिसपीछे गणेशादि देवताओंकी तिन्हीं के मन्त्रों से पूजाकरै फिर गेहूं के चूर्ण से चौकोनमण्डल बनाय तिसके बीच में सुन्दर पीढ़े को स्थापित कर तिसमें नवीन जगन्नाथजी के पटको स्थापितकरै पटके अभाव में कुंकुम और लालचन्दन से श्री जगन्नाथजीकी मूर्त्ति लिखाय तिसके आगे कलशको धरै

लशंधृत्वा अन्यस्मिन्पीठकेसूर्य्यादिग्रहा
न्विरचय्यच पुनश्चतुष्कोणमेकंकृत्वा तदु
परिमटुकंसंस्थाप्य तस्मिन्नेवपूरिकाः कुश
लिकाः घुरमकाःगलफीःखर्जूरीः पूपान्वाता
सानन्यांश्चयथाशक्तिसम्पादितान्भक्ष्यभो
ज्यलेह्यचोष्यादीन्संभार्य्यैकेन बृहत्पूपकेन
मटुकंपिधाय तदुपरिहस्तपरिमितंरक्तवस्त्र
माच्छादयेत अथतमेवपीठस्थं पटंरौशकौ
शुम्भपालाशपुष्पैरन्यैर्वसन्तर्तूद्भवपुष्पैश्च
यवबालाभिश्च चन्दनतुलसीधूपधीपनैवेद्या

और पीढ़े में सूर्यादि नवग्रहों को बनाय फिर दूसरा चौ-
कोनमण्डलरच तिसमें मटुके को स्थापितकर तिसीमेंपूरी,
कुशिली, खुर्मा, गलफियां, खजुरियां, पुआ, बतासा इत्या-
दि और भी यथाशक्ति सम्पादन की हुई भक्ष्य, भोज्य,
लेह्य, चोष्यादि वस्तुओं को एक एक और पुवे बहुत से
रख तिसके ऊपर एक हाथ के लालकपड़े को आच्छादित
कर तिसीपीढ़े में स्थित पटकी रौश, कुशुम्भ, पलाशादि
और वसन्तऋतु के उत्पन्नहुये सम्पूर्ण पुष्पों तथा यवकी
बाली, चन्दन, तुलसी, धूप, दीप, नैवेद्यादिकों से यथो-

दिभिस्तत्तन्मन्त्रैः पाद्यार्घाचमनादिभिश्च श्रीजगन्नाथंपूजयित्वा जनैस्सह कथांशृणु यात् ॥ इति जगन्नाथव्रतकथाविधिः ॥

चित तिन्हीं के मन्त्रों से पाद्य, अर्घ, आचमनादिकों से श्रीजगन्नाथजी की पूजाकर सम्पूर्ण बान्धवों और ब्राह्मणादिकों सहित कथाको सुनै ॥

इति जगन्नाथव्रतकथाविधिः ॥

अथ पूजा ॥

दामोदरसुरश्रेष्ठ भक्तानामार्त्तिहारक ॥ पाद्यंगृहाणमेदेवब्रह्मेन्द्रप्रतिपालक १ इतिपाद्यम् ॥ जगन्नाथनमस्तेस्तुसर्वापच्छान्तिकारक ॥ मयानिवेदितंभक्त्या स्वर्घ्यंमेप्रतिगृह्यताम् २ इत्यर्घ्यम् ॥ स्वर्द्धुन्यास्सुजलंस्वच्छं ब्रह्माद्यैरपिदुर्लभम् ॥ मयानिवेदितंभक्त्या सम्यगाचम्यतांत्वया ३ इत्याचमनीयम् ॥ गोघृतंदधिदुग्धंच शर्करागाङ्गजीजलम् ॥

अथ पूजा

हे दामोदर, सुरश्रेष्ठ, भक्तोंकी पीड़ाके नाशकरनेवाले, ब्रह्मा और इन्द्रके भी प्रतिपालक, हे देव! पाद्यको ग्रहणकीजिये (१) इतिपाद्यम् ॥ हे जगन्नाथ! सम्पूर्ण आपदाओं की शान्तिके करनेवाले आपके नमस्कारहै भक्तिसे दिये हुये मेरे अर्घको ग्रहण कीजिये (२) इत्यर्घ्यम् ॥ ब्रह्मादिक देवताओं को दुर्लभ श्रीगंगाजी का निर्मल जल भक्ति से निवेदन किया आप आचमन कीजिये (३) इत्याचमनीयम् ॥ गऊके घी, दही, दूध, शक्कर औरगंगाजी के जलसे बनेहुये पंचामृतसे हे प्रणतप्रिय, जगन्नाथ

पञ्चामृतैर्जगन्नाथस्नातुत्वंप्रणतप्रिय ४ इति पञ्चामृतस्नानम् ॥ आहतेहेपटेस्वच्छेसूत्रपटोर्णनिर्मिते ॥ इमेधौतोत्तरीयेमेगृह्यतांजगतांपते ५ इतिवस्त्रम् ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशेन निर्मितंब्रह्मसूत्रकम् ॥ इदंयज्ञोपवीतंमे दत्तंत्वं परिधारय ६ इतियज्ञोपवीतम् ॥ मलयाद्रिसमुद्भूतं सुगन्धाढ्यंमनोहरम् ॥ अनेनचन्दनेनैवप्रीयतांभक्तवत्सल ७ इतिचन्दनम् ॥ तुलस्यास्तुदलंरम्यं स्वर्णरूपसमन्वितम् ॥ तुभ्यंददामिदेवेश तेनतुष्टोभवप्रभो ८ इति

जी! स्नानकीजिये (४) इति पञ्चामृतस्नानम् ॥ हे संसारकेपति परमेश्वर! सूत्र, पट और ऊनसे बनेहुये नवीन निर्मल धोयेहुये ये दो वस्त्र ग्रहणकीजिये (५) इतिवस्त्रम् ब्रह्मा विष्णु महेश करके निर्मित इस मेरे दियेहुये ब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत को आप धारणकीजिये (६) इति यज्ञोपवीतम् ॥ हे भक्तवत्सल! मलयाचलसे उत्पन्न, सुगन्धयुक्त, मनोहर इस चन्दन से आप प्रसन्नहूजिये (७) इति चन्दनम् ॥ तुलसी के सुन्दरदल सोने और चांदी से युक्त हे देवेश! हे प्रभो! आपके अर्थदेताहूं तिससे भी प्रसन्नहूजि-

तुलसीदलम्॥मल्लिकाकमलादीनि सुगन्धा
निहृतानिमे ॥ तत्तन्माल्यानिपूजार्थं गृह्य
तांकमलापते ९ इतिपुष्पमाल्ये ॥ वनस्पति
समुद्भूतंदिव्यंगन्धंमनोहरम्॥ शर्कराज्या
क्तधूपोत्यंधूपमाघ्रातुमेप्रभो १० इतिधूपम् ॥
आज्याक्तवर्त्तिकावह्निप्रदीप्तंदीपमुत्तमम् ॥
गृहाणत्वंजगन्नाथ ममसौख्यंविवर्द्धय ११
इतिदीपम् ॥ गुडधानापूलिकापूप मोहन्भो
गकुश्लिका ॥ वातासषुम्मंकादिश्च मट्ठु
काथोभुज्यतांप्रभो १२ इतिनैवेद्यम् ॥ गा
ये (८) इति तुलसीदलम् ॥ हे लक्ष्मी के पति ! मेरेदिये
हुये चमेली और कमलादिक पुष्पोंको पूजाकेलियेग्रहण
कीजिये (९) इति पुष्पमाल्ये ॥ हे प्रभुजी ! वनस्पतियों
से उत्पन्न, सुन्दर गन्धवाल, मनोहर, शक्कर और घी सं-
युक्त इस धूपको सूंघिये (१०) इतिधूपम् ॥ हे जगन्नाथ
जो ! घीसंयुक्त बाती और अग्नि से जलतेहुये इस उत्तम
दीपको ग्रहणकर मेरे सुखको बढ़ाइये (११) इतिदीपम्॥
गुड़धनियां, पूरी, पुआ, मोहनभोग, कुशिली, बतासा,
हुरमाआदिको हे प्रभुजी!मट्ठुकेसे भोजन कीजिये (१२)

श्रांशुश्रूषमाणानां यथायायामतत्पदम् १
विष्णुं भ्राजत्किरीटांगदवलयगलाकल्पहा
रोत्तमांसं श्रोणीकांच्याक्तमध्यंमणिमकर
महा कुण्डलालक्तगण्डम् ॥ हस्तोद्यच्चक्रश
ङ्खाम्बुजगदममलंपीतकौशेयवासं विद्योत
द्भासमुद्यद्दिनकरशतभंपटमसंस्थंनमामि २
वंश्याभूषितहस्तपङ्कजघन श्यामांकपीता-
म्बराद्बिम्बारक्तफलोष्ठ चंद्रवदनात्कंजारुणा
त्तादिभोः ॥ कृष्णाच्छ्रीपुरुषोत्तमाद्धरिहर
ब्रह्मेन्द्रकेशानुतात्कृष्णाकृष्णसुभद्रमूर्त्तिवि
बांचनेवालों में श्रेष्ठ! हमश्रोताओं से कथाकहिये जिससे
विष्णुजी के पदको प्राप्तहों (१) मुकुट, बजुल्ला, पहुँची
को धारणकिये, सुन्दरहार गलेमें पहने,कटिमें जंजीरको
धारणकिये, मकराकृत सुन्दर कुण्डलों से गण्डस्थल शो-
भायमान,हाथमें निर्मल चक्र, शंख,कमल, गदा प्रकाश-
मान, पीलेरेशमी वस्त्रोंको धारणकिये, प्रकाशित दीप्ति
वाले और सैकड़ों सूर्यों के तुल्य प्रकाशित ऐसे श्री वि
ष्णुजी के नमस्कारकरते हैं (२) वंशीसे भूषित हैं कर
कमल, मेघों की तुल्य श्यामवर्ण, पीताम्बरको धारे, कुं

श्रिताज्ज्ञानेनतत्त्वंपरम् ३ सूतउवाच॥एक
स्मिन्समयेप्राप्तं वासऽयंप्राहवासवः॥ सुर
र्षेममवाञ्छासीन्नरलोकेव्रजाम्यहम् ४ उवा
चनारदोहृष्टोवासवंप्रतिसत्वरम्॥ निर्देशं
ब्रह्मणोज्ञात्वा कथयामिसुरेश्वर ५ इत्युक्त्वा
नारदोऽभ्यागाद्यत्रब्रह्मासभास्थितः॥ शि
वोविष्णुस्सदिक्पाल चन्द्रसूर्यादिसंवृतः ६

दुरू फलके तुल्य लाल ओष्ठों वाले, चन्द्रमा के सदृश मुखारबिन्द, लालकमल से नेत्र, ब्रह्मा, इन्द्र, वरुणादि देवताओंसे स्तुति किये गये, कल्याणकी मूर्त्ति ऐसे श्री विभुपुरुषोत्तमसे परे तत्त्वको हमनहीं जानते (३) अब सूतजी शौनकादिक ऋषीश्वरों से कथा प्रारम्भ करते हैं कि हे ऋषीश्वरो! एकसमयमें नारदमुनि से श्रीइन्द्रजी यह कहते भये कि हे नारदमुनि! हमारे यह वांछा है कि मनुष्य लोकमें जावें (४) इन्द्रके ऐसे बचन सुन परम प्रसन्न मुनिजी शीघ्रही प्रत्युत्तर देते भये कि हे सुरेश्वर! ब्रह्माकी आज्ञालेकै मैं आपसे जानेको कहूंगा (५) ऐसा कहकर नारदमुनि शिव, विष्णु, दिक्पाल, चन्द्र सूर्या-दिकोंसे युक्त ऐसे ब्रह्माजी के पास जातेभये (६) उनको

तंदृष्ट्वादण्डवन्नत्वा पपातब्रह्मणोऽन्तिके ॥
ब्रह्मोवाचनतंदृष्ट्वा नारदंप्रतिसत्वरम् ७
किमर्थमागतोसित्वं वत्सस्वागमनंवद ॥
नारदोवक्तिपितरमिन्द्राद्यायेदिवौकसः ८ ते
वाञ्छन्तिस्थितिंकर्तुं वर्षेभारतसञ्ज्ञके ॥
आज्ञापयमहाराज योग्यंचेद्वचनंमम ९ पृ
च्छन्तंवासवस्यार्थं प्राहविष्णुस्तुनारदम् ॥
वचसामाधुरेणैव व्रतानामुत्तमंव्रतम् १०
नारदागमनंशश्वल्लोकानांतेपरंहितम् ॥

देखके नारदमुनि दण्डवत्कर समीपही बैठतेभये परन्तु शीघ्रही ब्रह्माजी कुछ न बोले (७) हे वत्स! किसलिये आये हो अपने आगमनका कारण तो कहो ऐसा भी जब न पूछा तबतो नारदमुनि अपने आपही पिताजी से कहनेलगे कि इन्द्रादिक देवता (८) भारतखण्डमें स्थिति करना चाहते हैं यदि आप मेरे वचनको योग्य समझिये तो आज्ञादीजिये (९) इन्द्रका प्रयोजन पूंछतेहुये नारद मुनिसे श्री विष्णुजी मधुर वचनोंसे व्रतों में उत्तमव्रत कहतेभये (१०) कि हे नारदजी! आपका आगम संसार के हितके लियेहै आपसे देवताओंको दुर्लभ गुप्तव्रत क-

ब्रवीम्यद्यव्रतंतुभ्यंगोप्यंचसुरदुर्ल्लभम् ११
मद्विग्रहोजगन्नाथो वंगदेशेभविष्यति ॥ त
स्यैवपूजनंचेदं येनसर्वविनिर्मितम् १२ वि
ष्णोश्चवचनंश्रुत्वा नारदोप्याहसत्वरम् ॥ व
दस्वामिन्व्रतंकेन विधाने नापिचार्चनम् १३
उवाचनारदंविष्णुर्विधानं श्रीजगद्विभोः ॥ य
वपिष्टैश्चतुष्कोणं कृत्वापीठंततोन्यसेत् १४
उत्तमन्तुपटंन्यस्य पीठकोपरिपूजयेत् ॥
पटाऽभावेचन्दनेन रक्तेनपीठकेलिखेत् १५
जगन्नाथस्यमूर्तिंश्चलिखित्वातत्रपूजयेत् ॥

हताहूं (११) कि मेरा शरीर बंगदेशमें जगन्नाथजी होंगे जिनसे सम्पूर्ण रचना हुई है तिन्हींका पूजन करना चाहिये (१२) विष्णुजी के वचनसुन शीघ्रही नारदमुनि बोले कि हे स्वामिन्! यह तो कहिये किस बिधि से पूजन करना चाहिये (१३) तब विष्णुजी श्रीजगन्नाथजीकी पूजनविधि कहनेलगे कि यवके आटेसे चौकोन मण्डल बनाके उसपर पीढ़ेको धरे (१४) उसीपर उत्तम पटको रखके पूजनकरै पट न होवे तो पीढ़ेमें लालचन्दनसे (१५) जगन्नाथजी की मूर्त्तिको लिखके तथा स्वास्तिवाचन पू-

हेरम्बम्पूजयित्वादौ स्वस्तिवाचनपूर्वकम्
१६ सूर्याद्यङ्कग्रहंचेष्ट्वा तत्तन्मंत्रैःप्रपीठ
के॥ अग्रेचकलशंधृत्वा केशंगौरींप्रपूजये
त् १७ आहूयद्विजवरंकश्चिद्धोत्रिणोदारसंयु
तान्॥ अन्यांश्चप्रेमसंयुक्तान्कथांश्रोतुम
थाह्वयेत् १८ चतुष्कोणस्थितंभाण्डंमटुकं
पूरयेदितः॥ गुडधानैःपूलिकाभिश्चपुर्मैश्श
ङ्करपालकैः १९ कुशुलीगल्पिकाभिश्चगुल्गु
लामालपूपकैः॥ पपचिकाभिश्चवातासैर्मटु
कंपूरयेत्प्रभोः २० बृहतापूपकेनैव पिधा

र्वक श्रीगणेशजीकी भी पूजाकरै (१६) पीछे में अपने
अपने मंत्रों से सूर्य्यादि नवग्रहोंका पूजनकर आगे क-
लशरख वरुणगौरीकी भी पूजाकरै (१७) किसी ब्राह्मणों
में श्रेष्ठ पण्डितको तथा स्त्रियों सहित बान्धवों और प्रेम
संयुक्त और भी कथा के सुनने वालोंको बुलाके (१८)
चौकोन में स्थित प्रभुजी के मटुकेको गुड़धनियां, पूरी,
खुरमा, शंकरपाला (१९) कुशिली, गल्पिका, गुल्गुला, मा-
लपुआ, पपची, बतासों से पूरितकरै (२०) बड़ेपुएसे ढकके
उसपर लालकपड़े को आच्छादितकर कथा सुनै और

यारक्तवस्त्रकैः॥ आच्छाद्यकथांश्रृणुयाच्छ्राव येदागताञ्जनान् २१ पूजयित्वाजगन्नाथं नैवेद्यैर्धूपदीपकैः॥ रौशपालाशकौशुम्भैःपु ष्पैरन्यैर्ऋतूद्भवैः २२ यवस्यबालिकाभिश्च पूजयित्वाजगत्पतिम्॥ कथांश्रुत्वाविधानेन दद्याद्विप्रायदक्षिणाम् २३ मटुकस्थंप्रसादं च दद्याद्यान्गृहमागतान्॥ स्त्रीभ्यश्चबालवृ द्धेभ्यस्स्वपरेभ्योऽतिहर्षितः २४ स्मारंस्मा रंजगन्नाथं नराःस्वंस्वंगृहंययुः॥ शक्तिश्चेत्स र्वविप्रेभ्यः प्रदद्याद्दक्षिणोत्तमाम् २५ जगन्ना

आये हुए मनुष्यों को भी कथा सुनावै (२१) जग-न्नाथजीकी नैवेद्य, धूप, दीपादि से पूजनकर रौश, टेसू, कुशुम्भ वा और भी वसन्त ऋतुके पुष्प (२२) यवकी बालियोंसे पूजाकर विधिसे कथासुन ब्राह्मणको दक्षिणा देवे (२३) अत्यन्त प्रसन्नहोके मटुके का प्रसाद घरमें आयेहुए अपने परायेस्त्री,बालक,वृद्ध सबकोदेवे (२४) जगन्नाथजीका स्मरण करतेहुए मनुष्य अपने अपने घर कोजावें जो शक्तिहोवे तो सब ब्राह्मणों को उत्तम दक्षि-णादेवे (२५) जगन्नाथजीकी प्रसन्नताके लिये नमस्कार

थस्यतुष्ट्यर्थं नमस्कारंततश्चरेत्॥ इत्युक्त्वा नारदंविष्णुस्सर्वभूतहितेरतः २६ आगत्य नारदोयोगीवासवंव्रतमुत्तमम्॥ कथयामास यत्नेनसर्वंविधिविधानतः २७ श्रुत्वाकृत्वावा सवोपिविधानेनव्रतंमहत्॥ तेनपुण्यप्रभावेन वासंकृत्वापुरन्दरः २८ नृलोकेभारतेवर्षेत्रि दिवेपुनरगात्स्वयम्॥ शौनकउवाच॥ सूतजा नासिभद्रंते पुनःकेनव्रतंकृतम्॥ श्रुत्वाचेन्द्र मुखात्सद्यो मुच्यतेसर्वकिल्बिषात् २९॥

करै सब प्राणियोंके कल्याणमें युक्त बिष्णुजी नारदमुनि से ऐसीविधिकहतेभये (२६) तबतो नारदमुनि भगवान् के पाससे आकेइन्द्रसे व्रतोंमें उत्तम जगन्नाथजीके व्रतक यत्न और विधि विधानसे सब कहतेभये (२७) इन्द्रसुनके विधिपूर्वक उत्तम व्रतकोकर उसीकेपुण्य प्रभावसे मनुष्य लोक भारतवर्ष में निवासकर फिर भी इन्द्रलोक को जाते भये (२८) तब शौनकजी फिर पूंछतेभये कि हे सूतजी! आप सब जानते हैं आपका कल्याण हो फिर किसने व्रतकोकिया जिसने इन्द्रके मुखसे सुनके व्रतकोकियावह सम्पूर्ण पापों से छूटगया (२९) शौनकादिक ऋषी-

सूतउवाच ॥ शृणुध्वमृषयस्सर्वे जगन्नाथ व्रतंशुभम् ॥ पृथिव्यांचरितंयेन सर्ववासव तःपरम् ३० आसीत्कश्चिद्द्विजश्रेष्ठो ब्राह्मणोवेदपारगः ॥ तस्यासीद्गृहिणीवामा विष्णोर्लक्ष्मीरिवापरा ३१ हर्म्यंतस्येन्द्रदौर्लभ्यं हैमस्तम्भसमन्वितम् ॥ नानारत्नसमाकीर्णंप्रवालबलिभिर्युतम् ३२ मणिविद्रुमरत्नौघैश्शोभितंचयथोचितम् ॥ शुकसारिकनादेनरामकृष्णेतिनादितम् ३३ गोभिरश्वै रथैर्हास्थैरिभैस्सौवर्णमालिभिः ॥ गुंजद्भ्रम

ऋषियोंके वचन सुन सूतजी बोले कि पृथिवी में इन्द्रके पीछे जगन्नाथजीकेशुभव्रतको जिन्होंनेकिया वह सुनिये(३०) कोई वेदके पारगामी श्रेष्ठब्राह्मणहोतेभये उनकी स्त्री बिष्णुजी की लक्ष्मी के सदृशहोतीभई (३१) इन्द्रके स्थान के सदृश महल, सोने के खंभोंसे युक्त, अनेक प्रकार के रत्नों और मूंगेकी बालियों से युक्त (३२) मणि, मूंगा और रत्नों से यथोचित शोभित,सुआ,सारिका पक्षी राम कृष्ण रामकृष्ण ऐसाशब्द कररहेहैं(३३) गऊ, घोड़ा- रथ, पैदल ये सब सुवर्ण की माला धारण कियेहुएहैं सु-

रगंडांतैश्शोभितंदिग्गजैरिव ३४ भूषांकुर्वं
तिहेम्नश्चराजतींस्वर्णकृद्वराः॥ वास्यकृल्लो
हकृद्रङ्गरजकागारशिल्पकाः ३५ पुत्रपौत्रप्र
भृतयोभुजंतिस्वर्णपात्रके॥ विप्रांगणेप्रखेल
न्तोधात्र्यादृष्टाश्चरक्षिताः ३६ दृष्ट्वास्वै
श्वर्यविभवंब्राह्मणींप्राहवैद्विजः॥ वाममेसक
लंस्वेनप्रयत्नेनसमर्जितम् ३७ तन्मुखाद्गग
र्वितंवाक्यंश्रुत्वाप्राहसुविस्मिता॥ नाथकिंव

गन्धके कारण से भ्रमरभी गुंजार कररहे हैं जैसे मतवाले हाथियों में भ्रमर गुंजार करते हैं (३४) जिसके यहाँ सोनार, लोहार, धोबी, कारीगर इत्यादिक अपना अपना काम कररहे हैं जैसे सोनार सोने वा चांदीका कामबनाते हैं ऐसेही कारीगर इत्यादिक मकान इत्यादि सदैवही बनाया करते थे (३५) पुत्र, पौत्र इत्यादिक सोने के बर्तन में भोजन करते थे और आंगन में धाय से रक्षित खेला करते थे (३६) ब्राह्मण ऐसे ऐश्वर्य्यका विभव देखके ब्राह्मणीसे बोले कि हे स्त्री! यहसब मैंनेही बड़े यत्नसे इकट्ठा किया है (३७) तिस ब्राह्मण के अभिमान भरे बचन सुनके विस्मययुक्त ब्राह्मणी बोली कि हे नाथ! आप ऐसे

दथावाच्यंसर्वंश्रीविष्णुनाकृतम् ३८ कर्तुंसर्वं समर्थःकःपृथिव्यांजातउत्तमः॥ ब्राह्मण्यावचनंश्रुत्वाप्रोवाचामर्षसंयुतः ३९ मदन्यःको जगन्नाथोयेनमेसकलंकृतम्॥ विप्रनैष्ठुर्यमाकर्ण्यजगन्नाथोतिकोपकृत् ४० क्षणेनैवहृतं सर्वंपुत्रपौत्रादिकंचयत्॥ गृहंसर्वंविनष्टंचबाह्याद्वारावशेषितम् ४१ बुभुक्षितोऽतिदुःखार्त्तस्तृष्णयापरिपीडितः॥ ब्राह्मणींप्राहविप्रोसौ वामेमांबाधतेक्षुधा४२ विप्रस्यवचनंश्रुत्वाब्रा

वचन न कहिये यह सम्पूर्ण विषणुका किया है (३८) सिवाय परमेश्वरके और कोई पृथिवीमें समर्थ उत्पन्न नहीं है कि सबकरसके ऐसे ब्राह्मणी के बचन सुन क्रोधयुक्त ब्राह्मण बोला (३९) कि हमसे दूसरा कौन संसार का स्वामी है मैंनेही सब कियाहै ऐसे निष्ठुर ब्राह्मण के वचन सुन जगन्नाथजी बड़ा कोपकर (४०) क्षणमात्रही में सब पुत्र पौत्रादिकों को बिनाशकर द्रव्य और स्थानों को भी विनाशकरतेभये केवलबाहरके दरवाजे बाक़ीरहजातेभये (४१) तब तो तृष्णा और दुःख से व्याकुल मारे भूंख के ब्राह्मण ब्राह्मणी से बोले कि हे स्त्री!हमको भूंख बहुत

ह्मणीरुदिताननना ॥ प्राहग्रामाटनंगच्छस्वा मिन्भिक्षार्थमेवभोः ४३ जगामविप्रोभिक्षा र्थंयाचित्वान्नमगाद्गृहम्॥ अपिष्यभैक्ष्यम न्नंसामर्दित्वाकाष्ठपात्रके ४४ स्वच्छाःकर्प ट्टिकाःकृत्वाधृत्वाचकाष्ठपात्रके॥ हस्तौप्रक्षा ल्यसागच्छेत्पाकस्थानाद्गृहान्तरे ४५ च तुष्कोणस्थितंविप्रंधृन्मृत्पात्रकमंडलुम्॥ दृ ष्ट्वापत्नीगताशीघ्रं प्रेषणायसुविस्मिता ४६ दृष्ट्वाकर्पट्टिकाहीनं काष्ठपात्रंद्विरोटिकम्॥

लगीहै (४२) ऐसे ब्राह्मणके वचनसुन रोतीहुई ब्राह्मणी बोली कि हे स्वामिन्! भिक्षा मांगबे के लिये दूसरे गांवको जाइये (४३) तब ब्राह्मण ब्राह्मणी के वचन ग्रहणकर भिक्षाके लिये जाते भये वहां से मांगके भिक्षाका अन्न ब्राह्मणी को देतेभये ब्राह्मणी उसको कठौते में माड़के (४४) अच्छी रोटी बनाके उसी कठौतेमें बन्दकर रसोई से निकलके हाथ धो दूसरे के स्थान में जातीभई (४५) वहाँ चौकोनमें स्थित मिट्टीका बर्तन और कमण्डलुको धारण किये ब्राह्मणको देखके बिस्मय युक्त पीसने के लिये ब्राह्मणी शीघ्रही आतीभई (४६) रोटीहीन कठौतेको देखके

विप्रायैवाददौसाध्वी जलंपीत्वास्वयंस्थिता
४७ एवंभूरिदिनेयातेस्वयंजर्ज्जरतांगता ॥
जगामसाथभिक्षार्थंनीत्वाभिक्षांगृहंसदा ४८
आगत्यस्वीयहस्तेनकृताःकर्पट्टिकाःशुभाः॥
पुनःपरिवेषणंकुर्याद्द्विजस्याग्रेयदापुनः ४९
रोटिकाद्वितयंशिष्टंदृष्ट्वापात्रेसुविस्मिता ॥
शिष्टांकर्पट्टिकांदद्याद्विप्रस्यक्षुन्निवृत्तये ५०
स्वयंपुनर्जलंपीत्वा कोपम्मन्येजगत्पतेः ॥
हृदयेचिन्तयन्त्येवं नैवजानातुसद्विजः ५१

दो रोटी शेष रहगई हैं सो ब्राह्मणको देके आप जलही पीके रहजातीभई (४७) ऐसेही बहुतदिनबीते आप भी ब्राह्मणी बुढ़िया होजाती भई तब तो सदा आपही भिक्षा मांगने जातीभई भिक्षाकोलेके (४८) घरमें आकेअच्छी रोटी बनाके फिर ब्राह्मण के आगे परिवेषण करती भई (४९) दोही रोटी शेष रहगई हैं ऐसे बर्तनको देखके विस्मित ब्राह्मणी दोनों रोटियों को ब्राह्मणही की क्षुधा निवृत्तिके लिये देतीभई (५०) आप फिर भी जलहीपी के जगन्नाथजीका कोपमानके हृदयमें यह चिन्तना करने लगी कि ब्राह्मण न जाने पावें (५१) नहीं तो दो शेष

इयंकर्पट्टिकाभुक्त्वा शिष्टांमह्यंददातिच ॥ एकस्मिन्दिवसेसाध्वी खट्वामारोप्यसंस्थिता ५२ जगादमेशिरःपीडा बाधतेमहतीप्रभो ॥ त्वमेवाद्यदिनेस्वामिन्मदर्थेरोटिकांकुरु ५३ निर्म्माय रोटिकाद्यामास्तुभ्यं दास्याम्यहं प्रभो ॥ प्रियास्नेहभराक्रान्तस्तयोक्तंकुरुतेद्विजः ५४ कृताःकर्पट्टिकास्तेन धृताश्चकाष्ठपात्रके ॥ प्रक्षाल्यस्वकरौसोऽपि दृष्ट्वा न्काष्ठपात्रके ५५ कोचिकारोटिकायुक्तम

रोटी रहजाती हैं तिसमें एकही आप भोजन करेंगे एक मुझे दियाकरेंगे ऐसा शोचके एकदिन वह पतिव्रता ब्राह्मणी चारपाई बिछाके पड़रहती भई (५२) और बोली हे प्रभुजी!इससमयमें मेरे शिरमें बड़ी पीड़ा होरही है इस से हे स्वामिन्! आज मेरे लिये आपही रोटी कीजिये (५३) आपको मैं बाहरसे रोटी बनादूंगी आप सेंक लेंगे ब्राह्मणी के वचनसुन स्नेहयुक्त ब्राह्मण रोटी करते भये (५४) रोटी बनाके कठौते में बन्दकर आप बाहर निकल के हाथधो फिर कठौतेको देखतेभये (५५) तो रोटियाकोचिया रहजातीभई और सबरोटियां अन्तर्द्धान होजाती

न्यत्सर्वंतिरोहितम् ॥ तदोवाचवचोभायामे तत्किंकारणंवद ५६ त्वत्कृतेचैवमेवंस्यान्म त्कृते यत्तुकौतुकम् ॥ सोवाच प्रेमयुक्तार्थंव चनंपत्युरन्तिके ५७ भोभोःस्वामिन्नित्यशो ऽपि शिष्टकर्पट्टिकाद्वयम् ॥ त्वदग्रेलज्जया युक्ताद्वयंपरिवेषयाम्यहम् ५८ एतदर्थंदिने चास्मिन्कारयेयंचरोटिकाम् ॥ त्वत्तःकम लपत्राक्ष विभोतत्परिक्षम्यताम् ५९ प्रोवाच ब्राह्मणींविप्रो भार्येगच्छामि सत्वरम् ॥ द्र ष्टुञ्चजगतांनाथं भार्योवाचपतिम्प्रति ६०

भई तबब्राह्मण ब्राह्मणीसे बोले यह क्याहुआ इसका का- रणकहो (५६) तुम्हारे रोटी करनेसे ऐसा नहीं होताथा हमारे करने से जो यह कौतुक हुआ तबतो ब्राह्मणी पति के समीप प्रेमयुक्त वचन बोली (५७) कि हे स्वामिन्! नित्यही ऐसा होता रहाहै कि दोही रोटी शेष रहजावें आपके आगे लज्जासे मैंने नहीं कहा (५८) हे कमल समान नेत्रवाले!हे स्वामिन्!इसीलिये मैंने आपसे रोटी कराई थी इसको आपक्षमा कीजियेगा (५९) तब ब्राह्मण बोले कि हे स्त्री!शीघ्रही जगन्नाथजी के दर्शनको जाताहूं

स्वामिन्गच्छाम्यहंद्रष्टुं त्वयासाकंजगद्गुरु
म्॥ उभौतौसम्मतिंकृत्वाजगन्नाथस्यदर्शने
६१ हर्षितौजग्मतुर्द्रष्टुंजगन्नाथंचदम्पती ६२
कदाचित्त्वारोधेस्तटविपिनसङ्गीतरसिकं स
रस्वत्यायुक्तो विभुरपिहरिश्रीनिवसति॥ शि
वश्चोमायुक्तो विभुहरिहरोज्ञानशिवदो जग
न्नाथस्वामी नयनपथगामीभवतुमे ६३ ॥
इति श्रीजगन्नाथमाहात्म्येप्रथमोध्यायः १॥
तब ब्राह्मणी पतिसे बोली (६०) कि हे स्वामिन्! आपके
साथ जगन्नाथजीके दर्शनको मैं भी चलूंगी ऐसी दोनों
ब्राह्मण ब्राह्मणी जगन्नाथजी के दर्शनकी सम्मतिकर
(६१) प्रसन्नमन स्त्री पुरुष जगन्नाथजी के दर्शनको च-
लतेभये (६२) मनमें स्त्री पुरुष जगन्नाथहीजी का स्मरण
करतेथे कि हे जगन्नाथस्वामी! मेरे नेत्रोंके आगेहोकेदर्श-
न दीजिये आप किसीसमयमें समुद्रकेकिनारे लक्ष्मीजी
सहित अप्सराओंके गानको गीतोंमें रसिकहोके सुनतेथे
सरस्वतीयुक्त जैसे ब्रह्माजी और पार्वतीसहित श्रीमहादे-
वजी जैसे ज्ञान और कल्याणके देनेवालेहैं ऐसेहीआपभी
हैं (६३)॥ इति श्रीजगन्नाथमाहात्म्येप्रथमोऽध्यायः १॥

श्रीसूतउवाच ॥ अथान्यांसम्प्रवक्ष्यामि ब्राह्मणस्यगतिंशुभाम् ॥ अग्रेऽचलत्सदा विप्रो ब्राह्मणीपतिमन्वगात् १ अग्रेऽमिलच्चलन्मार्गे तडागःपल्वलंशुभम् ॥ पप्रच्छतुरुभेविप्रं जगन्नाथस्यकिङ्करम् २ क्कगच्छसिद्विजश्रेष्ठमत्सन्देशहरोभव ॥ उवाच ब्राह्मणोभूयो वचनंप्रेममिश्रितम् ३ द्रष्टुं श्रीजगतांनाथं गच्छावःशृणुपल्वल ॥ तडागःपल्वलोभूयोऽवोचतांद्विजसत्तमम् ४ पल्वलस्यतडागेच तडागस्यचपल्वले ॥ ज

सूतजीबोले हे शौनकादिकऋषीश्वरो! और भी ब्राह्मणकी शुभगतिको कहताहूं तिसको सुनिये कि ब्राह्मण तो सदा आगेही चलतेभये और ब्राह्मणी पतिके पीछेही पीछे जातीभई (१) चलते चलते आगे एकताल और तलैया मिलतेभये दोनों जगन्नाथजी के दास ब्राह्मण से पूंछतेभये (२) कि हे द्विजश्रेष्ठ! आप कहांजाते हैं हमारा सन्देश भी लेजाइयेगा तब तो ब्राह्मण प्रेमयुक्त वचनबोले (३) कि हे ताल! श्रीजगन्नाथजीके दर्शनको जातेहैं तब दोनों ताल तलैया फिर ब्राह्मण से बोले (४) कि हे ब्रह्मन!

त्वंनगच्छति ब्रह्मन्सन्देशामिममद्भुतम् ५ ज
गन्नाथस्यपुरतो वदत्वंयदिमन्यसे ॥ तथे
तिप्रत्युवाचाथ ब्राह्मणोभक्तितत्परः ६ विप्र
पत्नीप्रहृष्टाभूत्स्मरन्तीजगताम्पतिम् ॥ पु
नरग्रेचलद्विप्रो गजेन्द्रंप्रापमार्गगः ७ गजे
न्द्रोवक्तिवैविप्रं द्विजत्वंयासिकप्रभो ॥ गजे
न्द्रंप्रत्युवाचेदं विप्रोपिश्रूयतांद्विज ८ जग
न्नाथस्ययात्रार्थं गच्छामिब्राह्मणीयुतः ॥ उ
वाचवचनंनागो विप्रंस्तुत्वासगद्गदः ९ म

तालका जल तलैया में और तलैया का जल ताल में नहीं जाताहै यह अद्भुत संदेशहै (५) इसको जो आप योग्य समझें तो जगन्नाथजी के आगेकहें तब तो भक्तिमें तत्पर ब्राह्मण ऐसाही करेंगे यह कहतेभये (६) ब्राह्मण की स्त्री प्रसन्नहोतीभई जगन्नाथजी का स्मरण करतेहुए दोनों आगेचले तो एकहाथी मिलताभया (७) उस गजेन्द्रने ब्राह्मणसे कहा कि हे द्विज! आप कहां जातेहैं तब तो ब्राह्मण हाथी से बोले (८) कि ब्राह्मणी सहित जगन्नाथजीके दर्शनको जाते हैं तब तो हाथी गद्गद होके ब्राह्मणकी स्तुतिकर बोले (९) कि हे ब्राह्मण! मेराभी एक

यापिकथितंचैकं सन्देशंकथयस्वभोः ॥ बालबद्धोबलीचैको नाचलद्यत्रसंस्थितः १० तत्रकिंकारणंचेदं कथयस्वममप्रभो ॥ तथेत्युक्त्वाद्विजश्रेष्ठोऽग्रेचलतिसत्वरम् ११ मिलितवानुत्तमावाम्रवृक्षौ पथिसंस्थितौ ॥ ऊचतुर्वचनंविप्रं क्वेतोयासिद्विजोत्तम १२ प्रत्युवाचद्विजश्रेष्ठश्चाम्रौ दृष्ट्वाफलान्वितौ ॥ द्रष्टुंयामिजगन्नाथंब्राह्मण्यासहितोमुदा १३ ऊचतुःपुनरानम्य ब्राह्मणंत्वाम्रपादपौ ॥ जगन्नाथाग्रतो भूयादावयोश्चाम्रभूजयोः १४

सन्देश कहियेगा कि मैं अत्यन्त बलवान्हूं परन्तु बालसे बँधाहुआ जहां खड़ाहूं तहां से नहीं चलसक्ता (१०) हे प्रभुजी ! इसमें क्याकारणहै इसको कहिये तब तो ब्राह्मण ऐसाही करेंगे यह कह शीघ्रही आगेचले (११) तो मार्ग में दो उत्तम आम्रके वृत्तामिलतेभये दोनों बोले कि हे द्विजोत्तम आप कहांजाते हैं (१२) फलेहुए दोनों वृक्षोंको देखके ब्राह्मणबोले कि आनन्दसहित ब्राह्मणी को संग लिये जगन्नाथजी के दर्शनको जाते हैं (१३) तब तो दोनोंवृक्ष ब्राह्मणके नमस्कारकर बोले कि जगन्नाथजी के

पथिप्राप्तौचूतवृक्षौ फलितौपुष्पितौतथा ॥
सुपक्कौमिष्टतापन्नौभवेतांकीटकान्वितौ १५
तथेतिप्रतिजग्राह सन्देशन्त्वाम्रवृक्षयोः ॥
पुनरग्रेऽचलद्विप्रो मार्गेप्येकोऽमिलद्द्वयः १६
नितम्बेतस्यसंलग्नः पीठकस्तेनदुःखितः ॥
सोप्युवाचवचोविप्रं क्कगमिष्यसिसत्वरम् १७
विप्रस्तद्वचनंश्रुत्वा प्रोवाचप्रेमविह्वलः ॥ जग
न्नाथस्यपूजार्थं गमिष्यामि द्विजोत्तम १८
द्विजस्यवचनंश्रुत्वा स्वसन्देशंन्यवेदयत् ॥

आगे हमारा भी सन्देश कहियेगा (१४) कि मार्ग में दो आम्रके वृक्षमिले थे वे फलते फूलते हैं परन्तु जब पकके मीठे होजातेहैं तो कीड़े पड़जाते हैं(१५)तब ब्राह्मण आम्रके वृक्षोंका सन्देश ग्रहणकर आगे चले तो मार्ग में एक पक्षी मिलताभया (१६) कि जिसके नितम्बमें पीढ़ालगा हुआहै तिससे अत्यन्त दुःखित शीघ्रही ब्राह्मणसे बोला कि आप कहां जाते हैं (१७) प्रेममें विह्वल ब्राह्मण ऐसे वचन सुनकर बोले कि हे पक्षियों में श्रेष्ठ! हम जगन्नाथ जीके दर्शनको जाते हैं (१८) ब्राह्मणके वचन सुनकर पक्षी अपना सन्देश कहताभया कि किस हेतुसे मेरा नि-

पीठलग्नोनितम्बोमे यातःकेनैवहेतुना १९ सन्देशमेतमेवंमे जगन्नाथान्तिकेवद ॥ तथेतिस्वीकृतोविप्रः पुनरग्रेऽचलद्द्विजः २० गच्छन्मार्गेऽमिलच्छूद्रो रजतस्वर्णवेष्टितः ॥ कपर्द्दिकाभिरुल्लूकैस्सहितोऽप्यन्नवर्ज्जितः २१ गच्छन्तंद्विजवरंप्राह ब्राह्मणत्वंकगच्छसि ॥ विप्रोवदातितंशूद्रं रजतस्वर्णवेष्टितम् २२ जगन्नाथस्ययात्रार्थं कर्तुंयास्यामिसत्वरम् ॥ शूद्रोऽप्याहद्विजश्रेष्ठं गच्छन्तंजर्जराङ्गकम् २३ जगन्नाथान्तिकेविप्र मत्सन्दे

तम्ब पीढ़ेमें लगा हुआहै (१९) इसमेरे सन्देशको आप जगन्नाथजीके समीप कहियेगा तब ऐसाही करूंगा यह स्वीकारकर ब्राह्मण आगे चलतेभये (२०) मार्गमें सोने और चांदी से अलंकृत, कपर्दिका और उलूकों से युक्त, परन्तु अन्नसे वर्जित ऐसा शूद्र मिलताभया (२१) जाते हुए ब्राह्मणसे शूद्रनेकहा कि हे ब्राह्मण! आप कहांजाते हैं तब ब्राह्मण सोने और चांदीसेअलंकृत शूद्रसे बोले (२२) कि जगन्नाथजी की यात्रा करने के लिये शीघ्रही जाते हैं तब जर्जर अङ्गवाले ब्राह्मण से शूद्रने कहा (२३)

शंसमर्प्पये: ॥ स्वर्णरूप्यान्वित:शूद्र: क्षुधार्त्तश्चान्नवर्जित: २४ केनपापेनतत्सर्व्वं कथयस्वममप्रभो ॥ तथेत्युक्त्वाद्विजश्रेष्ठोऽगच्छदग्रेमुदान्वित: २५ पुनरग्रेभुजङ्गोपि द्विजेन्द्रम्प्राहसत्वरम् ॥ क्वगच्छसिहि भूदेव ब्राह्मणीसहितोऽधुना २६ विप्रश्चाजगरम्प्राह द्रष्टुंयास्येजगत्पतिम् ॥ मत्सन्देशमिमंविप्र जगन्नाथान्तिकेवद २७ पयोऽन्नम्मेऽग्रतो नित्यन्तिष्ठन्नैवोपभुज्यते ॥ तत्र किंकारणंब्रू

कि जगन्नाथजीके समीपमें मेरे सन्देशको कहियेगा कि सोने और चाँदीसे युक्तभी शूद्रहै तिसपरभी अन्नसे वर्जित क्षुधासे व्याकुल रहताहै (२४) किसपापसे यह फल हुआहै इसका हे प्रभु! सम्पूर्ण हाल कहिये यहसुनकर आनन्द सहित ब्राह्मण सन्देश कहना स्वीकारकर आगे चलतेभये (२५) फिर आगे सर्प शीघ्रही ब्राह्मणसे बोला कि हे ब्राह्मण! इससमय में आप ब्राह्मणी सहित कहां जाते हैं (२६) ऐसा सुनकर ब्राह्मण अजगर से बोले कि जगन्नाथजी के दर्शनको जातेहैं तब अजगरने कहा कि मेरे सन्देशको जगन्नाथजी से कहना (२७) कि

हिकृपास्तियदितेमयि २८ तथेतिमत्वावि
प्रोऽसौ पुनरग्रेचलन्मुदा ॥ मार्गेतमचल
न्कूर्मोमहादुःखीतिचाब्रवीत् २९ कगच्छसि
द्विजश्रेष्ठत्वंवदस्वममप्रभो ॥ आहद्विजवरो
वाक्यं दृष्ट्वाकच्छपमद्भुतम् ३० जगन्नाथा
न्तिकंयावःपूजार्थंकारणंवद ॥ उवाचकच्छ
पोवाक्यंविप्रायाभाष्यविह्वलः ३१ मत्सन्देशं
जगन्मूर्तेरन्तिकेवदतंप्रभो ॥ कूर्मोदृष्टोमया
प्येकोचलन्नैवास्तिकिंचन ३२ तत्रापिकारणं

दूध और अन्न मेरे आगे रक्खा रहताहै परन्तु नहीं भो-
जन करसक्ता इसमें क्या कारणहै जो आप मेरे ऊपर कृपा
करें तो सब वर्णनकरें (२८) ऐसा सुनकर ब्राह्मण सन्देश
को अंगीकार कर आनन्दयुक्त आगे चले तो मार्ग में
महादुःखी कछुआ बोला (२९) कि हे प्रभु! हे द्विजश्रेष्ठ!
आप कहां जाते हैं यहसब हाल कहिये तब ब्राह्मण अ-
द्भुत कछुएको देखके बोले (३०) कि जगन्नाथजी की
पूजाके लिये जाते हैं आप अपना कारण कहिये तब
विह्वल कछुआ ब्राह्मण से बोला (३१) कि हमारा स-
न्देश जगन्नाथजी से कहियेगा कि मैंने एक कछुएको

ब्रूहिजगन्नाथममप्रभो ॥ तथेतिप्रतिजग्राह कूर्मोक्तंवचनंद्विजः ३३ अग्रेऽचलत्स्थतावेगे स्सुरभीवत्सकान्विता ॥ अब्रवीद्विप्रमाबोध्य विप्रमेद्यवचःशृणु३४ केदानींतेऽद्यगमनंब्रूहि मेद्विजसत्तम ॥ विप्रोवदतिगांदृष्ट्वासवत्सांब हुदुःखिताम् ३५ गच्छावस्सुरभेचाद्यद्रष्टुं श्रीजगतांप्रभुम् ॥ गौरुवाचप्रमुदितास्वीयंस न्देशकंद्विजम् ३६ सवत्सासुरभीदृष्टाचैका

देखाहै कि वह कुछभी नहीं चलसक्ता (३२) हे जगन्नाथ! हे प्रभुजी! इसमें कारण कहिये तब कछुए के वचन को अंगीकारकर (३३) शीघ्रही आगे चले तो बछवा सहित एकगऊ देखतेभये तब ब्राह्मणको समझाके गऊने कहा कि हे विप्र! इससमयमें मेरे वचनको सुनिये (३४) हे विप्रसत्तम! इससमयमें आप कहां जाते हैं तब ब्राह्मण बहुत दुःखित बछवा समेत गऊको देखके बोले (३५) कि हे गऊ! इससमयमें हम श्रीजगन्नाथजी के दर्शनको जाते हैं तब सवत्सा गऊ आनन्दसमेत ब्राह्मणसे अपना सन्देश कहती भई (३६) कि आप यह कहियेगा कि एक सवत्सा गऊ देखी है जिसके स्तनों से दूध बहरहा है

स्नुतपयोधरा॥ वत्संनैवस्रवन्तीचपाययन्ती पुनःपथि ३७ अत्रकिंकारणंतातजगन्नाथांतिकेवद॥ तथेतिमत्वाविप्रोसावगमत्पथिसत्वरम् ३८ काष्ठकेतामिलत्यग्रेमस्तकस्थितकाष्ठकः॥ दृष्ट्वाविप्रमुवाचेदंक्कत्वंयास्यसिसद्विज ३९ तमुवाचद्विजश्रेष्ठोजगन्नाथस्यमंदिरम्॥ गमिष्यामीतितंनत्वोवाच काष्ठशिराःपुनः ४० काष्ठंमेशिरसोनैव नित्यंचोत्तरतिप्रभो॥

परन्तु बछवा जब पीनेको आताहै तो दूध नहीं पिलाती और पन्हाती तो है (३७) यह सब जगन्नाथजी से कहकर कारण पूंछियेगा तब ब्राह्मण गऊके सन्देश को अंगीकारकर शीघ्रहीमार्ग में जाते भये (३८) तो लकड़ी का बेंचनेवालालकड़ीको मूड़में धरेहुए ब्राह्मण से बोला कि हे द्विजश्रेष्ठ! आप कहां जाते हैं (३९) तब द्विजश्रेष्ठ बोले कि जगन्नाथजी के मन्दिरको जाताहूं यह सुनकर काष्ठ शिरमें रक्खेहुए ऐसा काष्ठ बेंचनेवाला फिर ब्राह्मण के नमस्कारकर बोला (४०) कि हे प्रभुजी! मेरे शिरसे लकड़ीका गट्ठा कभी नहीं उतरता हे जगन्नाथजी! इसमें

तत्रकिंकारणंश्रीमज्जगन्नाथवदस्वमे ४१ त
थेतिवचनंमत्वाविप्रोसौपथिसत्वरम् ॥ चलि
त्वाग्रेयदाविप्रो याचित्वान्नमयाचयत् ४२
बुभुक्षोऽश्चद्विजस्याग्रे जगन्नाथोपातिष्ठति ॥
भोविप्रद्विजपत्नित्वमन्नं मेदीयतान्त्विदम्
४३ बुभुक्षितोहंत्वद्याचेगन्तुंनैवाद्यशक्यते ॥
ऊचतुर्ब्राह्मणीविप्रौगृह्यतांपुरुषोत्तम ४४ गृही
त्वाबुभुजेसोन्नमग्रेचलतसद्विजः ॥ पुनरग्रेद्वि
जोगद्धज्जगन्नाथोप्यगात्पुनः ४५ याचित्वा

जो कारणहो सो मुझसे कहिये (४१) उसके वचन
अंगीकारकर शीघ्रही ब्राह्मण अन्नको मांगतेहुए आगे
चले (४२) तो क्षुधातुर ब्राह्मण के आगे जगन्नाथ जी
प्राप्तहोतेभये और बोले हे विप्र! हे द्विजपत्नि! जो तुम अन्न
मांगके लायेहो वह हमें दीजिये (४३) हम बहुतक्षुधातुरहैं
चलभी नहीं सक्ते हैं इससे तुमसे मांगते हैं तब तो ब्राह्मणी
और ब्राह्मण बोले हे पुरुषोत्तमजी! ग्रहणकीजिये (४४)
तबभगवान्ने उसअन्नको भोजनकिया और ब्राह्मण आगे
चलके फिर मांगतेभये फिरभी जगन्नाथजी प्राप्तहुये (४५)

न्नंवरंदातुंद्विजायद्विजसत्तमः ॥ ब्राह्मणींब्राह्मणंचाहजर्ज्जरत्वंक्वगच्छसि ४६ जर्जरातेप्रियाविप्रमार्गेगन्तुंनशक्यते ॥ स्थितोत्थितश्शयानश्चनासिकौष्ठोरसोपिवा ४७ येनकेनप्रकारेणपश्यामोजगतांपतिम् ॥ तत्रैवान्तर्द्धधेविप्रोजगन्नाथोजगत्पतिः ४८ पुनर्विप्रोऽचलन्मार्गे ब्राह्मण्यासहितोमुदा ॥ मार्गेमिलन्तींगोपस्य पत्नींप्राहद्विजोत्तमः ४९ भोभो

और अन्नको मांग के भगवान् ब्राह्मणको वर देने के लिये ब्राह्मणी और ब्राह्मणसे ब्राह्मणरूपहो के बोले कि हे दुर्ब्बल ब्राह्मण! आप कहां जाते हैं(४६)हेब्राह्मण! तुम्हारी जर्जरा प्रिया तो मार्ग में चलनेमेंभी समर्थ नहीं है तब ब्राह्मण बोले कि बैठते, उठते, सोते, नाक, ओष्ठ और छाती के बल (४७) किसी न किसी तरह से जगन्नाथ जी को देखेंगे ऐसा सुनकर विप्ररूप जगन्नाथजी अन्तर्द्धान हो गये (४८) फिर आनन्द से ब्राह्मणी सहित विप्र आगे चले तो मार्ग में मिलती हुई गोप की स्त्रीसे ब्राह्मण बोले (४९) कि हे गोप की स्त्री ! मेरी बनाईहुई जगन्नाथजी की

गोपस्यपत्नित्वंमत्प्रणीतांकथांशृणु॥ शूद्रा विप्रमुखाचेत्थंमैवंनैववदद्विज ५० मद्गेहेमहिषीगावोदुग्धंवादधिबालकः ॥ सर्वंहिमद्वशेप्राप्तंगृहेचैवस्थितंचयत् ५१ महिषीणांगवाञ्चापिदोहोनैवाद्यजायते ॥ दुग्धंभाण्डस्थितंचाग्नौतद्भाण्डोद्वरितंगतम् ५२ बालामेरक्षितास्सर्वेंगच्छन्तीतस्ततश्चते ॥ याःकाश्चित्स्त्रियोदीनादरिद्रामृतभर्तृकाः ५३ ताःशृण्वन्तिकथाःसर्वामिलित्वामादृशानतु ॥

कथा सुनो तब तो शूद्रकी स्त्री बोली कि हे ब्राह्मण! ऐसे वचन मत कहो (५०) मेरे घरमें भैंस, गाय, दूध, दही, बालक इत्यादि जो कुछ घरमें हैं सब मेरेही वशमेंहैं (५१) और भैंस, गाय अभी तक दुही भी नहीं गई और अग्नि में जो दूध रख आईथी वह उफला गया होगा (५२) मुझ से रक्षित सब बालक लोग इधर उधर चले गये होंगे जे स्त्रियां दीन, दरिद्रिणी और विधवा होती हैं (५३) वेही सब मिलके कथा सुनती हैं हमारी समानवाली नहीं सुनती हैं इस प्रकार बहुत सा कहके अपने स्थानको चली

एवंबहुविधंचोक्त्वाजगामनिजमन्दिरम् ५४
गेहेसर्वंहृतंदृष्टंजगन्नाथस्यदोषतः॥ विप्रस्या
न्तिकमायान्तं गोपंकश्चिद्द्विजोत्तमः ५५
श्रावयित्वा कथां गोपं ब्राह्मणोजलमापिबे
त् ॥ कम्बलस्तस्यसौवर्णोयष्टिश्चापिसुव
र्णिका ५६ दृष्ट्वास्वर्णमयंसर्वंप्रोवाचद्विजसत्त
मम् ॥ गच्छन्तमग्रतःस्थित्वागोपोहर्षितमा
नसः ५७ विप्रोवदत्तुष्टवाक्यंगोपंहर्षसमाकु
लम् ॥ त्वदीयंसर्वमेवैतज्जगन्नाथस्यतुष्टितः
५८ जातंस्वर्णमयंसर्वंगृहाणत्वंममाज्ञया ॥

गई (५४) तो घरमें क्या देखती है कि जगन्नाथजी के कोपसे सब हर गया ब्राह्मणने प्राप्त हुए किसी गोप को (५५) कथा सुनाके जलपान किया तो कथाके प्रभाव हीसे कम्बल और लाठी जो गोप लिये हुए था सब सुवर्ण के हो गये (५६) प्रसन्नमन गोप अपने कम्बल लाठी को सोने का देख के आगे खड़ा होके ब्राह्मण से बोला (५७) तब तो ब्राह्मणने प्रसन्नता से भरे गोप से कहा कि तुम्हारे यह सब जगन्नाथजीहीकी प्रसन्नता से (५८) सोनेका होगया है इसको हमारी आज्ञासे ग्रहण

इतिप्रभाष्यविप्रोसौचलत्यग्रेप्रहर्षितः ५९
ग्रामंग्रामंततोगच्छेत्सुतायागृहमुत्तमम् ॥
सुखिनी पतिपुत्राद्यैर्महिषीगोवत्सकार्षिकैः
६० तामाहूयद्विजोब्रूयात्सुतेमत्तःकथांशृणु॥
सुतोवाचप्रकुपितापितरंविप्रमावद ६१ अ
स्माकंनक्षणंशिष्टं कार्याद्गार्हस्थ्यसम्भवा
त ॥ इतश्चेतःप्रधावन्तिसुतारक्षाविवर्जिताः
६२ दुग्धमुद्धरितंभाण्डादग्नौभवतिभस्म
सात् ॥ एवंबहुविधंचोक्त्वा कथांतत्याजविप्र

कीजिये ऐसा कह हर्षयुक्त ब्राह्मण आगे चलते भये (५९)
इस गांव से उस गांवमें जातेजाते अपनी कन्या के घरमें
गये जोकि पति पुत्रादि और गौ भैंस बछवाआदि खेती
की चीज़ोंसे बहुत सुखी थी (६०) तिससे ब्राह्मणने कहा
कि हे कन्या! हमसे कथासुनो तबतो कन्याक्रोधयुक्तहो पि-
तासे बोली कि ऐसी बात मतकहो (६१) हमको गृहस्थी
के कामों से क्षणभरकी छुट्टी नहीं है हमारे बालक रक्षा
विना इधर उधर घूमते हैं (६२) अग्निमें चढ़ाहुआ दूध
उफलाके बर्तनसे सब अग्निहीमें भस्महोरहा होगा ऐसी
ब्राह्मणसे बहुत प्रकारकी बातें कह कथाको छोड़जाती

तः ६३ सर्वंतस्याहृतंयातंजगन्नाथप्रकोपतः॥ पुनरग्रेचलद्विप्रःपूजार्थंजगतांप्रभोः ६४ गत्वागत्वामिलन्कन्यागेहंजर्ज्जरतांगतम् ॥ तत्रस्थितांसुतांदृष्ट्वा दुःखितांदुःखितोभवत् ६५ उत्थित्वाकन्यकास्वीयांमातरं पितरं तदा ॥ मिलित्वारोदनञ्चक्रेपितृभ्यांरोदनं गता ६६ रुदित्वाव्रतमाप्टच्छगाथामेश्रूयतांसुते ॥ सुतोवाचस्वपितरंमातर्मेकथ्यतां कथा ६७ पितोवाचकथांगीत्वासुतेह्यर्चंजगत्पतिम् ॥ रौसकौसुम्भपालाशपुष्पंचयव

भई(६३)कथाके छोड़नेसेजगन्नाथजीके कोपसे उसकेसब हरगया फिरभी ब्राह्मण जगन्नाथजीकीपूजाकेलिये आगे चले (६४) चलते चलते दूसरी कन्याका घर जोकि गिरा हीहुआथा प्राप्तहुआ उसमें अपनी दुःखित कन्याको देख के आपनेभी बहुत दुःखकिया (६५) वह कन्या उठके अपने माता पितासे मिलके रोदन करनेलगी माता पिता नेभी बहुत विलापकिया (६६) रोदन से निवृत्तहोके दोनोंनेकहा कि हे कन्या! हमसे कथासुनो तबतो कन्याने कहा कि कहिये (६७) तब ब्राह्मणने कथा सुनाके कहा

बालिकाम् ६८ आनीयाथसुतेशीघ्रंकथामे श्रूयतांपुनः ॥ कोचिकांरोटिकांकृत्वापितृभ्यांसन्निवेदयेत् ६९ नभुञ्जातेतदीयान्नमितिनिश्चितमानसौ ॥ जगन्नाथंतयासाकंकथांश्रुत्वाप्रपूजयेत् ७० कोचिकाद्वितयंतस्यैदत्त्वातौक्षुधयार्दितौ ॥ गच्छेतामग्रतोभूत्वासुतायाःपुत्रपौत्रकाः७१बुभुक्षापीडितायातास्तानाहकन्यकाभृशम् ॥ युष्मन्मातामहेनैवदत्तंभ्रमरिकाद्वयम् ७२ एकेनकाष्ठपात्रेणा

कि हे कन्या ! जगन्नाथजीकी पूजनकरना रोस, कुसुम्भ, पलाश और यवकी बाली (६८) इन सबको लाके फिर कथाको सुनना तबतो कन्याने रोटिया कोचिया बनाके माता पितासे निवेदन किया (६९) माता पिताने यह निश्चयकिया कि इसका अन्न न खायँगे तब कन्यासहित जगन्नाथजीकी कथा सुनके पूजन करतेभये (७०) पूजनके अन्तमें दो कोचिया कन्याकोदे आपदोनोंजने भूंखे ही आगेगये तब कन्याके पुत्र पौत्र(७१) भूंखसे व्याकुल आते भये तिनसे कन्याने कहा कि तुम्हारे नानाने दो भौंरीदीहैं (७२) उनको मैंने काष्ठके बर्तनसे ढकादियाहै

च्छाद्यमेतेघृतद्वये ॥ इत्याज्ञांहिसमादायस्व मातुश्चबुभुक्षिताः ७३ काष्ठपात्रंसमुद्धृत्यचा दायरोटिकाद्वयम् ॥ दृष्ट्वास्वर्णमयम्बाला स्त्रोटयन्तिबलवद्भृशम् ७४ नत्रुटतस्तदाबा लाविस्मितामातुरन्तिके॥प्रोचुश्चणकजेमा तारोटिकेनैवत्रस्यतः ७५ दृष्ट्वामाताहस न्त्यद्धारोटिकेस्वर्णजेमुदा ॥ हर्षेणधावमा नासामातुरंतमुपाययुः ७६ पितर्मातर्गृहाणेमे रोटिकेस्वर्णजेमुदा ॥ नमेऽस्तिदुहितस्तुभ्यं

तुम जाके खालो ऐसी अपनी माकी आज्ञापाके भूखसे व्याकुल बालक (७३) काष्ठके बर्तनको उठाके दोनोंरो-टियोंको सोनेकी देखतेभये तब तो बड़े जोरसे तोड़तेभये (७४) परन्तु जब न टूटीं तब तो विस्मित हो माताके पास आके कहा कि हे माता! रोटी नहीं टूटती है (७५) तब माता आनन्दसे सोनेकी रोटियोंको देखके हँसके अपनी माताके पास लातीभई (७६) और बोली कि हे माता! पिता अपनी सोने की दोनों रोटियां लीजिये तब उन दोनोंने कहा कि हमारी नहीं हैं तुम्हारे ऊपर जगन्नाथजी

जगन्नाथस्यवैकृपा ७७ कन्यातद्दिनमारभ्यसुखिनीस्याद्गृहेस्वके ७८ ॥

इति श्रीजगन्नाथमाहात्म्येपातालखण्डेब्राह्मणगजादिसंवादे सुतायास्सुखत्वसम्पादकोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

ऋषयऊचुः॥ सूतसूतमहायोगिन्वदनोवदतांवर ॥ ततःकिमकरोद्विप्रोजगन्नाथप्रसादतः १ सूतउवाच॥शृणुध्वमृषयस्सर्वेसंवादंवि

की कृपा है (७७) उसदिन से लेके कन्या अपने घरमें सुखीही रहतीभई (७८)

इति श्रीजगन्नाथमाहात्म्येपातालखण्डेउन्नामप्रदेशान्तर्गततारगांवनिवासिपण्डितरामबिहारीसुकुलकृत भाषाटीकायांब्राह्मणगजादिसंवादेसुतायास्सुखत्वसम्पादकोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

शौनकादिक ऋषीश्वर बोले हे सूत ! हे सूत! हे महायोगिन्!हे वक्ताओं में श्रेष्ठ ! तिसके पीछे जगन्नाथजी के प्रसादसे ब्राह्मणने क्या किया (१) तब सूतजी ने कहा कि हे ऋषीश्वरो ! विष्णुजी और ब्राह्मण का संवाद सु-

ष्णुविप्रयोः॥ यस्य श्रवणमात्रेणजना गच्छ
न्तिस्वंपदम् २ अथतंसंप्रवक्ष्यामिब्राह्मण
स्यमहात्मनः॥ जगन्नाथस्यसंवादंसर्वलो
कसुखावहम् ३ किञ्चिद्दूरेगतेविप्रेजगन्नाथ
स्समागतः॥ वृद्धद्विजवरोभूत्वाब्राह्मणंपर्य
पृच्छत ४ भोभोविप्रक्वयासीति मह्यंब्रूहि
द्विजोत्तम॥ सउवाचद्विजश्रेष्ठो ब्राह्मण्यास
हितोमुदा ५ जगन्नाथस्ययात्रार्थंयास्यामो
द्विजसत्तम॥ कथंयास्यासिवृद्धस्त्वं ब्राह्म
णीतेऽतिजर्जरा ६ स्थितोऽस्थितःप्रसुप्तश्च

नियें जिसके सुननेसे मनुष्य अपने पदको प्राप्तहों (२)
अब सब लोकोंके सुखका देनेवाला महात्मा ब्राह्मण और
जगन्नाथजीका संवाद कहते हैं (३) कि ब्राह्मण कुछहीदूर
गयेथे कि वृद्धब्राह्मणका रूप धारकर जगन्नाथजीने पूंछा
(४) कि हे द्विजोत्तम! ब्राह्मण यह तो कहिये आप कहां
जाते हैं तब आनन्दसे ब्राह्मणीसहित द्विजश्रेष्ठ ने कहा
(५) कि हे द्विजसत्तम! जगन्नाथजी की यात्रा के लिये
जातेहैं तब जगन्नाथरूप ब्राह्मणने कहा कि तू वृद्ध और
तेरी ब्राह्मणी अत्यन्त जर्जर है कैसे जावेगा (६) तब

जाग्रतोहस्ततोऽपिच॥ पादतोघ्राणतश्चोष्ठो दरोरस्तोगमिष्यति ७ उवाचद्विजवरोवृद्धो ब्राह्मणंब्राह्मणींप्रति ॥ प्रसन्नोहंजगन्नाथोभ क्त्यातेद्विजसत्तम ८ अतोऽग्रेनैवयासित्वंद र्शनंममजायते॥ वरंब्रूहिवरंब्रूहिप्रसन्नोहंतवो परि ९ स्वामिन्नोदर्शनेनैवसर्वंयातंवरंमम॥ प्रसन्नश्चेज्जगन्नाथ पाहिमांशरणागतम् १० एवंबहुविधंस्तुत्वा जगन्नाथंजनार्द्दनम्॥ सु भद्रासहितंरामं त्रयीमूर्त्तिजगत्प्रभुम् ११ प्र

ब्राह्मणनेकहा कि बैठते,उठते,सोते,जागते,हाथ,पैर,नाक- ओष्ठ, उदर, उर इनसब अंगोंके बलसे जैसे बनेगा अव, श्य जाऊंगा (७) तब तो ब्राह्मणरूपी जगन्नाथजी ने ब्राह्मण ब्राह्मणीसे कहा कि हेद्विजसत्तम!जगन्नाथ मैंहींहूं तुम्हारी भक्तिसे प्रसन्न हुआहूं (८) इसके आगे अब नहीं जाइये हमारे दर्शन होगये मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहूं वर- दान मांगिये (९) तबतो ब्राह्मणने कहा कि हे स्वामिन्! आपके दर्शनही से सब बरदान हमको प्राप्तहुए हे जग- न्नाथजी! यदि आप प्रसन्नहैं तो शरणागतकी रक्षा की- जिये (१०) इसप्रकार जनार्दन,सुभद्रासहित, राम, त्रयी-

सन्नंचजगन्नाथं वीक्ष्यप्रोवाचसद्विजः ॥ मा
र्गस्थितानांसन्देशंपर्य्यपृच्छत्प्रयत्नतः १२
भगवन्मार्गगोऽप्येकस्तडागश्चसुपल्वलः ॥
पल्वलस्यतडागेन तडागस्यचपल्वले १३
जलंनैतिह्यथोब्रूहि कारणंचोभयोरिदम् ॥
अथोवाचजगन्नाथो ब्राह्मणंप्रेमविह्वलम् १४
पत्न्यावास्तां वणिग्जात्योर्भ्रात्रोर्ज्येष्ठक
निष्ठयोः ॥ ज्येष्ठयातुकनिष्ठायै ज्येष्ठायैतु
कनिष्ठया १५ दत्त्वात्वाच्छादितेभाण्डेवाय
नंनैवकर्हिचित् ॥ तेनपापप्रभावेण जलंनैवो

मूर्त्ति, जगत्प्रभु, जगन्नाथजी की अनेक प्रकार से स्तुति कर (११) प्रसन्न जगन्नाथजी से मार्ग में स्थित तडागादिकोंका प्रयत्नसे सन्देश पूछा (१२) कि हे जगन्नाथजी! हमारी मार्ग में एक ताल और तलैया मिले थे तलैयाका जल तालमें और तालका तलैयामें (१३) नहीं जाता इन दोनोंका कारण कहिये तब प्रेममें विह्वल ब्राह्मण से जगन्नाथजीने कहा (१४) कि वैश्य जातिकी बड़े छोटे दो भाइयोंकी स्त्रियां हैं बड़ी ने छोटीको और छोटी ने बड़ीको (१५) बायन कभी नहीं दिया इसीपापके प्रभावसे

भयोरियात् १६ तत्रैवास्थाप्यचूर्णेन रौस कौशुम्भपुष्पकम् ॥ पालाशंयवबालीश्च मटुकंभार्य्ययत्नतः १७ कथयित्वाकथांरम्यां दत्त्वाताभ्यांप्रसादकम् ॥ अनेनैवप्रसादेन तेषांपापंप्रणश्यति १८ उवाचपुनरानम्यगजेन्द्रोममऽमार्गगः ॥ संदेशःकथितस्तेनबालबद्धःकुतोऽस्म्यहम् १९ गजेन्द्रोमत्तशूद्रोऽस्ति बालंनिर्मूलसत्वरम् ॥ नैवनिस्सारितं बालंनिर्मूलास्त्वरयाचिताः २० तेनैवपाप

दोनोंका जलनहीं मिलता (१६) ते दोनों यवके आटे से मंडल बना मटुकेको रख उसी में रौस, कुशुम्भ,पलाशादि के पुष्पों और यवकी बालियोंको भर (१७) सुन्दर कथा को कहाय आपस में प्रसाद को भोजन करैं तो इसी से उनके पाप नाश होजावेंगे (१८) तब ब्राह्मण ने फिर नमस्कार कर कहा कि हमारी मार्ग में एक हाथी बाल बँधा हुआथा उसने अपना संदेशा पूंछाहै कि यह किस पाप से हुआहै (१९) तब भगवान् ने कहा कि गजेन्द्र मतवाला शूद्रहै यह कंघे में जो बाल रह जाते हैं उनको नहीं साफ़ करता था (२०) तिसी पाप के भार से ह-

भारेण हस्तिनीबालबन्धिता ॥ मट्टुकस्यप्र
सादेन तस्याःपापंप्रणश्यति २१ भगवन्म
ममार्गस्थौ पुष्पितौचाम्रपादपौ ॥ फलितौ
पक्कमापन्नौ कीटकाढ्यौसुशोभनौ २२ अत्र
किंकारणंब्रूहि तयोर्मुक्तिर्भवेत्कथम् ॥ प्रत्यु
वाचजगन्नाथो द्वाविमौचाम्रपादपौ २३ वि
द्वद्वरौधनाढ्यौच ताभ्यांबालानपाठिताः ॥
तेनैवपापभारेण चाम्रौमिष्टफलान्वितौ २४
सुपक्कौकीटमापन्नौ मार्गस्थौब्राह्मणोत्तमौ ॥

स्तिनी बाल में बांधी गई है मट्टुकेके प्रसादसे तिसके भी पापनाश होजावेंगे (२१) तब फिर ब्राह्मणने कहा कि मेरी मार्ग में दो सुन्दर आम्रके बृक्षथे वे फूलते, फलते भी हैं परन्तु जब पकजाते हैं तो कीड़े पड़जाते हैं (२२) इस में क्या कारण है इनदोनोंकी मुक्ति कैसे होगी तब जग-न्नाथजीने कहा कि ये दोनों आम्रके वृक्ष (२३) धनवान् और विद्वानों में श्रेष्ठ थे इन्होंने बालकों को नहीं पढ़ाया तिसी पापके भारसे मीठे फलसे युक्त आम्रके वृक्षहुए (२४) परन्तु पकनेपर कीड़ों से व्याप्त होजाते हैं ये दोनों ब्राह्मणोत्तम मट्टुकेका प्रसाद ग्रहणकरेंगे तो उनके पापका

मट्टुकस्थप्रसादेन तयोःपापविमोचनम् २५
उवाचपुनरानम्यमार्गस्थोमेवयोऽद्भुतः॥ नि
तम्बःपीठमापन्नस्तस्यकिंतत्रकारणम्२६ सं
देशःकथितस्तेन पीठान्मुक्तिःकथंभवेत्॥ ज
गन्नाथोऽवदद्वाक्यंपक्षीशूद्रोधनीमहान् २७
ज्येष्ठमादृश्यपीठस्थोनैवचोत्थितमाददौ ॥
तेनपापेनपक्षीस्यान्नितम्बस्थितपीठकः २८
मट्टुकस्थप्रसादेन पीठान्मुक्तिर्भविष्यति ॥
पुनराहद्विजश्रेष्ठो जगन्नाथंजगत्पतिम् २९

नाशहोगा (२५) तब फिर ब्राह्मणने नमस्कारकर कहा कि मार्ग में एकपक्षी मिलाथा जिसका नितम्ब पीढ़े में लगाहुआ था इसका क्या कारणहै (२६) उसने भी सन्देशा कहाहै कि पीढ़ेसे मुक्ति कैसे होगी तबजगन्नाथ जीने कहा कि यहपक्षी पूर्व्व जन्मका बड़ा धनवान् शूद्र है (२७) ज्येष्ठको देखके पीढ़े से उठके उसके बैठनेके लिये नहीं दिया तिसीपापसे उसपक्षी के नितम्बमें पीढ़ा लगाहुआहै (२८) मट्टुके के प्रसादसे पीढ़े से मुक्तिहोगी फिर द्विज श्रेष्ठ ने जगन्नाथ जगत्पतिजी से कहा (२९)

नाथमेपथिशूद्रोऽस्ति तिष्ठन्वक्तिस्ववृत्तक
म् ॥ नबुभुक्षानिवृत्तासीन्मेकिंतत्राहकारण
म् ३० राजतस्वर्णताम्रादिमुद्राढ्यूवराटि
का ॥ इमेसर्वेपदार्थामेऽप्यन्नंनैवात्रदृश्यते
३१ मट्ठुकस्थप्रसादेनस्वन्नंतेनापिलभ्यते ॥
उवाचपुनरानम्यविप्रोवाक्यमनुत्तमम् ३२
भगवन्मेऽमिलन्मार्गेपीनस्सर्पोमहाबली ॥
नगच्छेन्नैवखादेच्च शेतेचैवदिवानिशि ३३
तत्रकिंकारणंब्रूहिमह्यंसंदेशहारिणे ॥ सउ

कि हे नाथ! हमारी मार्ग में एक शूद्रने अपना वृत्तान्त कहाहै कि हमारी भूख नहीं निवृत्त होती इस में क्या कारण है (३०) चाँदी, सोना, ताँबा इत्यादिक सम्पूर्ण पदार्थ हैं परन्तु अन्न नहीं देख पड़ता (३१) तब जगन्नाथजीने कहा कि मट्ठुके के प्रसाद से अच्छा अन्न उसको भी मिलैगा फिर ब्राह्मणने नमस्कारकर जगन्नाथ जी से उत्तम वचन कहा (३२) कि हे भगवन्! हमारी मार्ग में महाबली मोटा सर्प मिलाथा जोकि न चलसकै और न खासकै रात्रि दिन सोताही रहताहै (३३) इसमें क्या कारणहै यह सन्देश लानेवाले मुझसे कहिये तब

वाचजगन्नाथोब्राह्मणंप्रणतान्वितम् ३४ सर्पोविप्रकुलेजातोब्राह्मणोवेदपारगः॥ स्ववृद्धमागतंदृष्ट्वानचैवोत्थितमाददौ ३५ समयेभोजनस्यासावदत्त्वाबालकान्प्रभुः॥ भुङ्क्तेस्वयंघृतंक्षीरंमिष्टंवाभक्ष्यमुत्तमम् ३६ तेनपापप्रभावेण जातःपीनोऽहिरुत्तमः॥ मटुकस्थप्रसादेन तस्यापिसुखमुत्तमम् ३७ पुनःसन्देशमाहाशु जगन्नाथस्यसान्निधौ॥ कूर्मस्यवचनंस्मृत्वा मार्गस्थस्यद्विजोत्तमः ३८ कायस्थस्यगृहे जातस्संख्यावान्चत्रिकार्य

जगन्नाथ जी ने नम्रतायुक्त ब्राह्मण से कहा (३४) कि यह सर्प वेदका पारगामी ब्राह्मण था इसने वृद्ध मनुष्य को आतेदेखके आसनसे उठके आसन नहीं दिया (३५) और भोजनके समय में ब्राह्मणने घी, दूध, मिठाई इत्यादिक उत्तम भोजन बालकों को छोड़के आपही ने खा लिये थे (३६) तिसी पापके प्रभाव से उत्तम मोटासर्प हुआहै मटुके के प्रसाद से तिसको भी उत्तम सुख प्राप्त होगा (३७) फिर द्विजोत्तमने जगन्नाथजी के निकट मार्ग में मिलेहुए कछुएका सन्देशा पूंछा (३८) तिसका

कृत ॥ लेखनेनैवस्वीयेन सर्वेषांत्त्रेत्रसम्भव
म् ३९ लिखित्वाशाणजेपत्रे धृत्वातिष्ठति
मूकवत् ॥ येप्यागच्छन्तिविप्राद्या मदीयान्नं
कियन्मितम् ४० तेषांनैवोत्तरंदद्यात्तेनपापे
नकच्छपः ॥ जायतेसोपिदुष्टात्मा कायेति
ष्ठतिसर्वदा ४१ वृत्तिच्छेदःकृतोयस्मात्तेन
नित्यंबुभुक्षितः ॥ मटुकस्थप्रसादेन कूर्मदे
हस्यमोचनम् ४२ भगवञ्छिष्टमेवैकं सन्दे

उत्तर जगन्नाथजी ने दिया कि यह कछुआ कायस्थ के
घरमें पैदा हुआथा एक क्षत्रिय के यहाँ हिसाब किताब
लिखने में था सो सब ब्राह्मणादिकों को जो क्षत्रिय
अन्नादिक देताथा उसीको लिखा करताथा (३९) उसके
पास जो ब्राह्मणादिक पूंछने को आतेथे कि हमारा अन्न
कितना हुआहै तब यह कायस्थ सुनके चुपरहताथा कुछ
भी नहीं बोलताथा (४०) तिसी पाप से वह कायस्थ
दुष्टात्मा कछुआ हुआहै जिससे कि ब्राह्मणादिकों को
प्रत्युत्तर नहीं देताथा (४१) और ब्राह्मणादिकों की वृ-
त्तिको नाशकरताथा इसीसे नित्यही भूखा रहताहै मटुके
के प्रसादसे कच्छपकी देहका मोचन होजायगा (४२)

शंशृणुमेप्रभो॥ मेमार्गेतुमिलत्येका सुरभी चातिदुःखिता ४३ सवत्सातिष्ठतिस्थाने व त्संनैवमपाययत्॥ दुग्धंस्रवतिसर्वत्र दोह नान्नैवलभ्यते ४४ तत्रकिंकारणंब्रूहि जगन्ना थममप्रभो॥ जगन्नाथोऽब्रवीद्वाक्यं ब्राह्म णंद्विजपुङ्गवम् ४५ काचिद्योषित्प्रमुग्धासी द्गृहिणीधनिकस्यच॥ मौद्गिकंमाषिकंपि ष्टं ताण्डुलीयंरसादिकम् ४६ पिष्ट्वाचपेष यित्वाच दधारान्यत्रवट्टकम्॥ शिलंचान्य

फिर ब्राह्मणने कहा कि हे भगवन्! हे प्रभुजी एक गऊ अत्यन्तदुःखित मार्ग में मिलीथी उसका सन्देशा सुनि-ये (४३) कि बछवासहित तो स्थान में खड़ी रहती है दूध सदाही चूता रहताहै न तो बछवे को पिलाती और न दुहने से दूध देती है (४४) हे जगन्नाथ! हे प्रभुजी इसमें जो कारणहो सो कहिये तब जगन्नाथजी ने द्विजश्रेष्ठसे कहा (४५) कि कोई धनवान् पुरुषकी मूर्ख स्त्री थी वह मूंग, उर्दके या चावलही के आटेको (४६) आप पीस के या किसी से पिसायके बट्टेको और जगहधर और शिलको और ही स्थान में रख आप गौकी तरह सोती

त्रसंधार्य्यशेतेचसुरभीवसा ४७ तेनैवपाप
भारेणसुरभीभवतिच्चणात् ॥ मट्ठकस्थप्र
सादेन तस्याःपापप्रमोचनम् ४८ पुनरेकं
चसन्देशंधाष्ट्र्येनत्वांब्रवीम्यहम् ॥ काष्ठ
क्रेतामिलन्मार्गे मस्तकोपरिकाष्ठधृत ४९
शिरसोनोत्तरेत्काष्ठंतत्रकिंकारणंप्रभो ॥ ज
गन्नाथोवदद्विप्रंकारणंकाष्ठधारिणः ५० का
ष्ठक्रेतावदत्पूर्वमभिमानीमदान्वितः ॥ कं
चिद्दीनंहिवृषणमाकस्माद्गृहमागतम् ५१

थी (४७) तिसीपापके भारसे गऊ हुईहै मट्ठके के प्रसाद
से तिसके भी पापका मोचन होजायगा (४८) तब
फिर ब्राह्मणने कहा कि धृष्टता से एक सन्देशा आपसे
और पूंछताहूं कि एक काष्ठका बेंचनेवाला मार्ग में मिला
जो कि काष्ठको शिरमें धारण किये था (४९) उसके
शिरसे काष्ठ नहीं उतरताथा इसमें हे प्रभुजी! जो कारण
हो सो कहिये तब जगन्नाथजी ने ब्राह्मण से काष्ठधारी
का कारण कहा (५०) कि यह काष्ठका बेंचनेवाला पूर्व
जन्मका महाअभिमानी मदयुक्त शूद्र था इसने आक-
स्मात् घरमें आयेहुए शूद्रको (५१) अत्यन्त पीड़ादेके

आपीड्यशिलमादाय तस्योरसिददौशिल
म् ॥ शिरसोनैवकस्यापितृणमुत्तारयेत्स्वय
म् ५२ तेनपापेनमहतामस्तकंकाष्ठसंयुत
म् ॥ मटुकस्थप्रसादेनकाष्ठस्यापिमुचिर्भवे
त् ५३ ततःस्तुत्वाजगन्नाथंदण्डवत्पतितोभु
वि ॥ प्रसन्नोभूज्जगन्नाथोविप्रोत्तिष्ठद्विजो
त्तम ५४ गृहीत्वाज्ञांजगन्नाथस्यात्मनोगृ
हमाचलत् ॥ मार्गेमार्गेमिलन्त्याशुयत्रतत्र
स्थिताश्चये ५५ तेभ्यस्सर्वेभ्यत्र्प्रादद्यात्प्र

उसकी छाती में शिलारखदी थी और किसी के भी शिरसे
तृणके बोझको नहीं उतारताथा (५२) तिसी महान्
पापसे काष्ठ बेंचनेवालेका मस्तक काष्ठसे युक्तही रहताहै
मटुके के प्रसादसे तिसके शिरसे काष्ठ उतरजावेगा (५३)
तब फिर ब्राह्मण ने जगन्नाथजी की स्तुतिकर पृथ्वी में
गिरके दण्डवत्की तब जगन्नाथ स्वामी ने अत्यन्त प्रसन्न
होके कहा कि हे द्विजोत्तम विप्रजी! उठिये (५४) ऐसी
स्वामी की आज्ञापा ब्राह्मण अपने घरको चलताभया
मार्ग में जितने सन्देशके देनेवाले थे सब जहां के तहांई
स्थित मिले (५५) तिन सबको मटुकेका प्रसाददिया

सादंमटुकस्थितम् ॥ भुक्त्वाप्रसादंतेसर्वेस्वं स्वंपापंचतत्यजुः ५६ स्वांस्वांयोनिमवाप्यैते तेसर्वेसुखमवाप्नुवन् ॥ तस्मात्तद्दिनमारभ्य पूजांचक्रुर्मुदान्विताः ५७ इत्येतच्छ्रीजगन्नाथमाहात्म्यमहदद्भुतम् ॥ श्रुत्वातेश्रीजगन्नाथसंवादेनातिहर्षिताः ५८ ॥ ऋषयऊचुः ॥ सूतसूतवदस्वामिन् ब्राह्मणःकिमकरोत्पुनः ॥ ताभ्यांदत्त्वाप्रसादंच मोचयित्वाचसङ्कटात् ५९ ॥ सूतउवाच ॥ द्विजस्यैवाद्भुतंकर्मवक्तुं

तिन्हों ने प्रसादको भोजनकर अपने २ पापोंको त्यागकर दिया (५६) अपनी अपनी योनियों को प्राप्तहोके ते सब सुखी होतेभये तिस दिनसे लेके आनन्दयुक्त जगन्नाथजी की पूजन करतेभये (५७) यह श्रीजगन्नाथही जी के संवाद से युक्त स्वामी जीका अत्यन्त अद्भुत माहात्म्य सुनके शौनकादिक ऋषीश्वर बोले (५८) कि हे सूत ! हे स्वामिन् ! यह तो कहिये कि फिर ब्राह्मण ने तिनको प्रसाददे संकटसे छुड़ाय क्या किया (५९) शौनकादिक ऋषीश्वरों के वचनसुन सूतजी बोले कि हे शौनक ! ब्राह्मण के अद्भुत कर्म कहने को कौन पृथ्वी-

कोऽभूद्धरातले ॥ तवस्नेहभरेणाहंकिंचिद्व क्ष्यामिशौनक ६० अग्रेचलद्विजश्रेष्ठोगत्वा गत्वागृहान्तिके ॥ इतस्ततोऽभ्रमद्विप्रःस्वकं गेहंनपश्यति ६१ कगतंमेगृहंशिष्टमिदानी मिदमन्यथा ॥ हर्म्यंचेन्द्रस्यगृहंरम्यंसौवर्णं सर्वतोदिशम् ६२ हरिकस्वर्णसुस्तम्भंमणि व्रातैस्समाकुलम् ॥ नानारत्नौघजटितंख चितंविद्रुमैर्वरैः ६३ दासदास्यादिभिर्जुष्टंशु कसारिकनादितम् ॥ पुत्रपौत्रप्रपौत्रैश्चधाव

तलमें समर्थ है परन्तु तुम्हारे स्नेहसे कुछ मैं कहताहूं (६०) कि वह द्विजश्रेष्ठ आगे चलके अपने घरके समीप जाके इधर उधर घरका भ्रम करताभया परन्तु अपना घर न देखता भया (६१) तबतो ब्राह्मण ने कहा कि मेरा घर कहांगया इससमयमें सुन्दर इन्द्रके स्थानों के तुल्य सब दिशाओं में सुवर्ण के महल दिखाई देते हैं (६२) कि जिनमें सोनेके खंभे लगेहुए हैं जो कि मणियों और अनेक रत्नों और सुन्दर मूंगाओं से जड़ेहुए हैं (६३) फिर जिन स्थानों में दास और दासी अपना अपना काम कररहेहैं शुक और सारिका शब्द कररही हैं पुत्र

द्भिर्वेश्मनोऽङ्गणे ६४ जुष्टंपुत्रप्रपौत्रादेर्वधू भिश्श्रीनिकेतनम्॥ मदान्धाःकुञ्जरागाव स्तुरंगारथतुरंगमाः ६५ उष्ट्रकाश्चोष्ट्रबंधाश्च सर्वेसौवर्णमालिनः॥ स्वीयस्वीयासुशाला सुबन्धिताश्चापियंत्रिताः ६६ द्वारदेशप्रको ष्ठेषुतिष्ठन्त्यन्येपदातयः॥ स्वर्णरौप्यकरा श्चैवलौहवास्यकराश्चये ६७ सौधकाराश्चि त्रकाराश्चान्येयेशिल्पकारकाः॥ स्वीयस्वी यक्रियायुक्ताः कुर्वन्तिस्वेनहस्ततः ६८ इ

और पौत्र घरके आंगन में दौड़रहेहैं (६४) पुत्र और पौत्रोंकी स्त्रियाओंसे भी अलंकृत और मतवाले हाथी, गायें, घोड़े, रथ और रथके चलनेवाले भी घोड़ोंसे व्याप्त हैं (६५) ऊंट,ऊंटके बन्ध सम्पूर्ण सुवर्णके मालाधारण कियेहुये अपनी अपनी शालाओंमें बँधे हुयेहैं (६६) द्वारों में सिपाही लोग सोने चाँदी और लोह इत्यादिक धातुओंको हाथमें लियेहुये खड़े रहते हैं (६७) महलों के बनानेवाले और चित्रोंके भी जाननेवाले वा अनेक प्रकारके शिल्पकार लोग अपने अपने हाथसे अपने अपने काम कररहे हैं (६८) तिनसे ब्राह्मण ने कहा कि

ष्ट्वातानुक्तवान्विप्रोभोभोः शिल्पकराजनाः
अत्रैवमेगृहंचास्तिखानयित्वावसद्धनी ६९
क्वगच्छामिक्वतिष्ठामिक्वमेतिष्ठंतिबांधवाः॥
एवंमीमांसमानायां विप्रपत्न्यां द्विजोत्तमे
७० आगारान्निर्गताबालाःपुत्राःपौत्राःप्रपौ
त्रकाः ॥ ऊचुःप्रांजलयोदीना विप्रक्वस्थि
तिरस्तिते ७१ उवाचब्राह्मणस्तूर्णम्बालाना
लोच्यशोभनान् ॥ भोभोविप्रसुतास्सर्वेम
द्गेहंवोऽन्तिकेपुरा ७२ नजानेक्वगतंगेहंकेन

हे शिल्पकारो! इसजगहमें मेरा स्थान था तिसकोकिसी धनीने खुदवाकर अपना महल बनवालिया है (६९) हम कहां जावें कहां ठहरें हमारे बान्धव लोग कहांहैं यह ब्राह्मणकी स्त्री और ब्राह्मण विचारही रहे थे (७०) कि स्थानोंसे पुत्र पौत्रादिक दुःखित होकरनिकले और हाथ जोड़कर ब्राह्मण से कहा कि हे विप्र! तुम्हारा घरकहां है (७१) तब ब्राह्मण ने शीघ्रही बालकों से कहा कि हे ब्राह्मणके बालको आगे तो हमारा स्थान तुम्हारेहीघरों के पास था(७२) परन्तु अब नहीं जानते कि कहां गया किस धनी ने खुदवाकर बनालिया तब बालकोंने कहा

वाधनिनाहृतम् ॥ बालाऊचुर्द्विजश्रेष्ठद्विज त्वंब्राह्मणीयुतः ७३ कस्थितिःकुतआयाति त्वदागारंगतन्त्वधः ॥ विप्रोवदतिधर्मात्मा बालानाभूषणान्वितान् ७४ गतावयंजग न्नाथदर्शनार्थंप्रियान्वितः ॥ तस्यदर्शनमा त्रेणसर्वंमेसफलंभवेत् ७५ श्रुत्वाद्विजमुखा द्वाक्यंपुत्राश्चप्रेमविह्वलाः ॥ धावन्तोवेष्टय न्त्याशुप्राणन्तन्वइवातुराः ७६ विप्रोऽपि रोदनंचक्रेब्राह्मणीसहितोमुदा ॥ गृहान्निर्ग

कि हे द्विजश्रेष्ठ आप ब्राह्मणीसहित (७३) कहां रहे और अब कहांसे आतेहैं जिसकारणसे कि तुम्हारा घर नष्टहोगया तबधर्मात्माब्राह्मणने आभूषण पहनेहुए बालकों से कहा (७४) कि हम प्रियासहित जगन्नाथजीके दर्शन करनेको गयेथे तिन्हीं के दर्शन से सब हमारा सफल हुआहै (७५) ऐसे ब्राह्मण के मुखसे वचनसुन प्रेममें विह्वल बालकों ने दौड़के वेष्टितकरलिया और ऐसे प्रसन्नहुये कि देहसे निकले हुए प्राणोंको जैसे फिर देह पाके प्रसन्न होवें (७६) फिर ब्राह्मणीसहित ब्राह्मण ने आनन्द से रोदनकिया यह अद्भुत रोदन सुनकर घरसे

त्यबध्वोऽपिश्रुत्वारोदनमद्भुतम् ७७ साद
रामेलनंचक्रुर्ब्राह्मण्याब्राह्मणस्यच ॥ क्रोड
यामाससंस्थाप्यब्राह्मणींब्राह्मणंसुताः ७८
आनिन्युस्स्वेगृहेरम्येयत्रतिष्ठन्तिदारकाः॥
श्वश्रूंचश्वशुरंचैवदृष्ट्वासर्वामुदान्विताः ७९
सिंचन्त्यश्वाश्रुधाराभिःप्रेमगद्गदमानसाः॥
कथयन्तिस्ववृत्तान्तं तयोःपृष्ट्वागतिंमुदा
८० ऊचुस्सर्वेसुमुदिताजगन्नाथंयजामहे॥
यस्यदर्शनमात्रेण सर्वंगृहसुतादिकम् ८१

स्त्रियोंने निकल के (७७) आदरसहित ब्राह्मणब्राह्मणी का मेलन किया और ब्राह्मणी के पुत्रोंने ब्राह्मणी को शीघ्रही कोरेमें बैठाकर (७८) जहां स्त्रियां थीं ऐसे सुन्दर घरको लेआये सासऔर ससुरको देखके सब स्त्रियां आनन्दको प्राप्तभईं (७९) और प्रेममें गद्गदमानस होके आंसुओंकी धाराओं से सींचनेलगीं फिर उनकी गति पूंछके आनन्द से अपना अपना वृत्तान्त कहने लगीं (८०) सबोंने प्रसन्नहोके कहा कि हम भी जगन्नाथ जी की पूजन करेंगे जिनके दर्शन ही मात्र से सब घर और पुत्रादिक ऐसी आनन्ददशा को प्राप्तहुए हैं (८१)

एवंकुर्वंतियेपूजांजगन्नाथस्यमाधवे॥ तेषांवै सकलावाप्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि ८२ ब्राह्मणोऽपिजगन्नाथंप्रत्यहंपूजयेत्ततः॥ रौसकौसुम्भपालाशपुष्पञ्चयवबालिकाः ८३ गोधूमचूर्णमादायसंभार्य्यमट्टुकंततः॥ येतडागादिकामार्गेमिलितादेहधारिणः ८४ तानाहूयद्विजोभूयःसुखिनीदुःखिनीसुते॥एतैस्साकंजगन्नाथं पूजयेच्चद्विजातिभिः ८५ श्रुत्वा प्रसादमेतेभ्योगाथांश्रुत्वाचविप्रतः॥ सर्वं

इसप्रकार से चैत्रमें जे जगन्नाथ जी की पूजन करते हैं तिनकी जन्म जन्म में सम्पूर्ण अभीष्टों की प्राप्तिहोती है (८२) ब्राह्मणभी नित्यदिन रौस, कुसुम्भ, पलाश के पुष्प और यवकी बालियों से जगन्नाथ जी की पूजन करते भये (८३) गेहूंके चूर्णको लेके मट्ठुकेको गुड़धनियां पूरी इत्यादिकों से भरते भये और जे तड़ागादि देहधारी मार्ग में मिलेथे (८४) तिनको फिर ब्राह्मणने बुलाया और सुखिनी दुःखिनी अपनी दोनों कन्याओं को लाके ब्राह्मणादिकों सहित जगन्नाथ जी की पूजन करते भये (८५) सबलोग जगन्नाथ जी के पूजन से

सुखमवाप्नोति जगन्नाथस्यपूजनात् ८६ ॥
इति श्रीजगन्नाथमाहात्म्येपातालखण्डेब्रा
ह्मणजगन्नाथसंवादेतडागादिपाप्युद्धार
पूर्वकब्राह्मणसुखसम्पत्तिसम्पाद
कोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

ऋषयऊचुः ॥ सूतसूतमहाभागवदनोव
दतांवर ॥ जगन्नाथकथोद्भूतंपीयूषंजुषतो
भृशम् १ अन्योद्विजवराद्भूयोगाथांपूजां

और ब्राह्मण से कथा सुनके प्रसादके भोजन से अत्यन्त सुख को प्राप्तहुए (८६)

इतिश्रीजगन्नाथमाहात्म्येपातालखंडे उन्नामप्रदेशान्तर्गत
तारगांवनिवासिपण्डितरामविहारीसुकुलकृतभाषाटी-
कायां ब्राह्मणजगन्नाथसंवादे तड़ागादिपाप्यु-
द्धारपूर्वकब्राह्मणसुखसम्पत्तिसम्पादकोनाम
तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

ऋषिलोगों ने फिर प्रश्नकिया कि हे महाभाग, वक्ता-ओं में श्रेष्ठ, सूतजी आप फिर जगन्नाथजी की कथा कहिये क्योंकि कथारूपी अमृत पीते पीते हमलोगों को तृप्ति नहीं होती (१) ब्राह्मणके पीछे किसने जगन्नाथ

चक्रोऽकरोत् ॥ कस्मिंश्चसमयेकेन विधा नेनचतंयजेत् २ सूतउवाच ॥ शृणुध्वमृषय स्सर्वेंतवस्नेहनियन्त्रितः ॥ वच्मिगाथांवि धानंचसमयंपूजनंप्रभोः ३ बसन्तेचैत्रवैशा खेकृष्णसोमेचकोचिकाम् ॥ रोटिकांचव्रती भुक्त्वाशुक्लेसोमेयजेद्विभुम् ४ प्रतिसंवत्सरं नित्यंप्रतिवारंव्रतीसदा ॥ अक्षतांस्तानगृ हीत्वातुक्षुधितश्रावयेत्कथाम् ५ अक्षतां स्तान्समादायभाण्डेसंस्थाप्ययत्नतः ॥ व जीकी पूजा और कथासुनी किससमय और किस वि- धानसे स्वामीजी का पूजन किया (२) तब सूतजी ने कहा कि हे ऋषीश्वरो तुम्हारे स्नेहमें नियंत्रित प्रभुजी के विधान और पूजन का समय और कथा को कहता हूं (३) कि वसन्त ऋतु में चैत्र या वैशाखके महीनेमें कृष्णपक्ष के सोमवारको व्रतकरनेवाला पुरुष रोटियाको- चिया भोजनकर शुक्लपक्ष में जगन्नाथ जी की पूजन करै (४) प्रतिवर्ष में व्रती पुरुष पूजनकरै वा प्रतिदिन पूजन करै विना भोजन किये अक्षतों को लेके कथा सु नावे (५) फिर तिन्हीं अक्षतों को यत्न से मट्ठके में धर

सन्तेचैत्रवैशाखेकथांश्रुत्वाविधानतः ६ त
ण्डुलानांहितेषांवै हविःकृत्वाव्रतीमुदा ॥
आहूयब्राह्मणंपूज्यभोजयेद्धविरुत्तमम् ७
तस्मैचदक्षिणांदद्याद्वाचकायद्विजातये ॥ द
द्यात्प्रसादमन्येभ्यआगतेभ्योगृहान्तिके ८
शक्तिश्चेद्दक्षिणांदद्याज्जगन्नाथस्यतुष्टये ॥
इतिकृत्वाविधानेन सकलंवाञ्छितंलभेत् ९
शौनकउवाच ॥ विप्रादन्यंजगन्नाथपूजकंव
दमेऽधुना ॥ सूतजानासिभद्रंतेकथापीयूष

वसन्तऋतु चैत्र वैशाख में कथा विधान से सुनै (६) फिर तिन्हीं चावलोंकी हवि बनाके व्रती पुरुष ब्राह्मणकी पूजनकर उत्तम हविको भोजन करावै (७) और कथा बांचनेवाले ब्राह्मणको दक्षिणा देवे तथा और भी घरमें आनेवालों को प्रसाददेवे (८) जो सामर्थ्यहो तो जगन्नाथजी की प्रसन्नता के लिये सबको दक्षिणादेवे इसविधि के करनेसे सम्पूर्ण वाञ्छितको प्राप्तहोता है (९) यहसुन शौनकऋषि ने फिर प्रश्न किया कि हे सूतजी विप्रको छोड़के जगन्नाथजी का पूजक कौन हुआ आपका कल्याण हो इस समय में कथारूपी उत्तम अमृत को फिर

मुत्तमम् १० सूतउवाच ॥ द्विजान्यक्तज्जग न्नाथपूजकंवोमयोच्यते ॥ अथान्यत्संप्रव क्ष्यामिचेतिहासंपुरातनम् ११ आसीत्कश्चि द्द्विजवरोनष्टदेहोविचक्षणः ॥ माधवेमासि संप्राप्तेऽकरोत्सोमेश्वरव्रतम् १२ चैत्रवैशाख कृष्णेतु भुक्त्वाकोचिकरोटिके ॥ चैत्रवैशा खशुक्लेतुकरोतिव्रतमुत्तमम् १३ एकवारंद्वि वारंचत्रिवारंव्रतमुत्तमम् ॥ कृत्वागतस्तडा गादिस्नानार्थंद्विजपुङ्गवः १४ कृतस्नानोद्वि

पान कराइये (१०) तब सूतजी ने कहा कि और भी ब्राह्मणको छोड़के जगन्नाथजीके पूजकको पुरातनइति-हास सहित आपसे वर्णन करताहूं (११) कोई ब्राह्मण अत्यन्त चतुर नष्टदेहवाले हुए उन्होंने वैशाख महीने में जगन्नाथजी का व्रतकिया (१२) चैत्र और वैशाख के कृष्णपक्ष में रोटिया कोचिया भोजनकर शुक्लपक्ष में उ-त्तम व्रत करते भये (१३) तीन बार तक उत्तम व्रतकर ब्राह्मण श्रेष्ठ स्नानके लिये तड़ाग में जाते भये (१४) वहाँ जाके स्नानकिया तो अपनीदेह सुवर्णकी हुई देखी फिर कईबारतक स्नानही करते रहे तबभी सुवर्णही की

जः पश्येत्स्वकं देहं सुवर्णकम् ॥ पुनस्स्नाति पुनस्स्नाति खिलखलेति हसन्मुदा १५ तदानीमागता वृद्धा शूद्रा भ्राष्ट्रान्नभर्ज्जिका ॥ हसन्तं ब्राह्मणं दृष्ट्वा कुपितोवाच निष्ठुरम् १६ कथं हससि मां विप्र वृद्धां त्वज्जननीमिव ॥ युवतीं काञ्चिदायातीं दृष्ट्वा हससि तु हासक १७ प्राह द्विजवरो वृद्धां सत्वरं विनयान्वितः ॥ वृद्धे नो रुष्टतां याहि त्वां तु नैव हसाम्यहम् १८ उवाच ब्राह्मणं शूद्रा माहात्म्यं किं वदाधुना ॥

देह रही तब ब्राह्मण आनन्दसे खिल खिलायके हँसे (१५) तिसी समयमें एक वृद्ध शूद्रकी स्त्री भी आई जो कि खेतोंसे अन्नको बहारके लिये थी और बहारी भी पास रक्खे थी वह ब्राह्मणको हँसते देखके क्रोधसे निष्ठुरवचन बोली (१६) कि हे ब्राह्मण! मुझ बूढ़ी को क्या हँसते हो मैं तुम्हारी माताके समान हूं किसी जवान स्त्रीको आती देखके हँसो (१७) तब ब्राह्मण श्रेष्ठ ने नम्रतायुक्त शीघ्रही उस बुढ़ियासे कहा। कि हे वृद्धे! तू क्रोध मतकरे मैं तुझको नहीं हँसता (१८) तब शूद्राने ब्राह्मणसे कहा कि फिर क्याहै इसका सब माहात्म्य हमसे कहो तब ब्रा-

उवाचब्राह्मणःशूद्रां वृद्धांकेशासितोचिताम् १९ सोमेस्वरस्यदेवस्य सोमवारेव्रतंभवेत् ॥ मधोःकृष्णेकोचिकांचरोटिकांचभुनज्म्यहम् २० भुक्त्वाशुक्लेपुनःसोमेव्रतंकृत्वा मुदान्वितः ॥ एकवारंद्विवारंचत्रिवारंकृतवानहम् २१ सरस्स्नातुंसमायातोदेहोमेस्वर्णताङ्गतः ॥ धन्योधन्यश्चमेदेवो येनदोषोहृतोऽद्यमे २२ शूद्रोवाचतवैवेत्थमन्येषामपितद्भवेत् ॥ उवाचविप्रोवृद्धांतांत्वंवृद्धेकिंकरिष्यति २३ वृद्धोवाचकरिष्येमे पुत्रोदे

ह्मण ने श्वेत केशवाली वृद्ध शूद्रासे कहा (१९) कि जगन्नाथ जी का चैत्रकृष्ण के सोमवार में व्रत होताहै उसमें मैंने रोटिया कोचिया भोजनकर (२०) शुक्लपक्ष के सोमवारमें आनन्दसंयुक्त तीनबारतक व्रतकर (२१) तड़ाग स्नान के लिये जो आया तो मेरी देह सुवर्णकी होगई हमारा देवता धन्य है जिसने इस समय में दोष हर लिया (२२) तब शूद्राने कहा कि तुम्हारेही लिये ऐसा हुआहै कि और के करनेसे भी होसक्ता है तब ब्राह्मण ने वृद्धासे कहा कि हे वृद्धे ! क्या तू भी करैगी (२३) बुढ़िया

शान्तरंगतः ॥ आगत्यस्वेगृहेवृद्धाव्रतंकर्तुं समुद्यता २४ एकंद्विकंत्रिकंकृत्वाचतुर्थेचा गमत्सुतः ॥ सुतंदृष्ट्वाहसन्तीसासुतःक्रुद्धोऽब्र वीद्वचः २५ मातर्मैवंहससित्वंशीघ्रमागन्तु कंयथा ॥ मातोवाचसुतत्वांनहसामिसहसा गतम् २६ धन्योधन्योहिमेदेवोयस्यसेव नतोमया ॥ प्राप्तस्त्वंदिग्विदेशस्थस्स्मृत्वा देवंहसाम्यहम् २७ व्रतंसोमेश्वरस्यैकंये नत्वंगृहमागतः ॥ मातस्तवैवकिंह्येतत्सर्वेषां

ने उत्तर दिया कि मेरा पुत्र परदेश में है मैं उसके आने के लिये व्रत करूंगी ऐसा कह अपने घर आके व्रत क-रने में उद्यतहुई (२४) तीनबार व्रत कियाहै कि चौथे व्रत मे पुत्र आन पहुँचा लड़के को देखके हँसी तबतो पुत्र क्रुद्धहोकर बोला (२५) कि हे माता ! मतहँसो जैसे जल्द आने वाले को हँसना चाहिये तैसे तुम हँसती हो तब माताने कहा कि हे पुत्र ! अकस्मात् आयेहुए तुमको नहीं हँसतीहूं (२६) मेरा देवता धन्यहै जिसके सेवन से परदेशी तुम प्राप्तहुए मैं उन्हीं देवका स्मरणकर हँसती हूं (२७) जगन्नाथजी का एक व्रतहै उसीके करने से

यैर्व्रतंकृतम् २८ करिष्येऽहंव्रतंतस्ययेनमेगृ
हिणीभवेत् ॥ एकंद्विकंत्रिकन्तेनकृतंसोमे
श्वरार्चनम् २९ चतुर्थेगृहिणीप्राप्तादृष्ट्वातां
हसतिस्वयम् ॥ हसन्तंपतिमालोक्यप्राह
क्रोधसमाकुला ३० नाहंकाणीनवैखञ्जा
शीघ्रंप्राप्तात्वयाप्रभो ॥ कथंमांहसतित्वद्य
भर्त्तःकारणमुच्यताम् ३१ भर्तोवाचरुदन्तीं
तांदृष्ट्वाक्रोधसमन्विताम् ॥ भद्रेकिंरोदिषि
त्वज्ञेनैवत्वांप्रहसाम्यहम् ३२ स्वीयदेवस्य

तुम घरमें प्राप्तहुए तब पुत्रने कहा कि हे माता! जो कोई
व्रतकरें सबको फल मिलताहै या तुम्हींको मिलाहै (२८)
मैं भी स्त्री मिलने के लिये व्रतकरूंगा ऐसाकह माताकी
आज्ञा से उसने भी तीन व्रतकिये (२६) चौथे व्रत में
स्त्री प्राप्तहोगई स्त्रीको देखके वह हँसनेलगा तबतो हँसते
हुए पतिको देखके क्रोधभरी स्त्री बोली (३०) कि हे
स्वामी! न तो मैं कानी या लँगरीहूं और अभी नई आई
हूं आप मुझे क्यों हँसते हैं इसका कारण कहिये (३१)
तब उसके पतिने क्रुद्धत देखके कहा कि हे स्त्री! तू मत
रोवे तुझको मैं नहीं हँसता (३२) अपने देवका माहा-

माहात्म्यं स्मारंस्मारंहसाम्यहम् ॥ एकंद्वि
कंत्रिकंचापिव्रतंकृत्वाचतुर्थकम् ३३ तेनैवत्वं
मयाप्राप्तानान्यथारोदनंकुरु ॥ भार्य्योवाच
प्रमुदिताभर्तारंप्रतिसत्वरम् ३४ तवैवैतद्व्रतं
सिद्धमुतान्येषांवदस्वमे ॥ योयःकुर्याद्व्रतं
चास्यदेवस्यविनयान्वितः ३५ एकंद्विकंत्रि
कंकृत्वाचतुर्थेनफलंलभेत् ॥ भार्य्याऽपिव्र
तमारेभेपुत्राप्त्यैभर्तृतःश्रुतम् ३६ एकंद्विकं
त्रिकंकृत्वाचतुर्थेगर्भमादधौ ॥ मासेयातेङ्क
त्म्य स्मरणकर हँसताहूं कि जिनको चौथे बारहीके व्रत
करनेमें (३३) तुम मुझको प्राप्तहुई और कोई हँसने का
कारण नहीं है तुम रोदन मतकरो तबतो आनन्दित हो-
कर स्त्रीने शीघ्रही स्वामी से कहा (३४) कि यह तो
बतलाइये आपहीको यह व्रत सिद्धहुआ या और को भी
होसक्ता है तब उसके पतिने कहा कि जो कोई विनय
सहित जगन्नाथजीका व्रतकरै (३५) चार व्रतके करने
से फलको प्राप्तहोगा तब स्वामी से सुनके स्त्रीने भी पुत्र
के अर्थ व्रतकरना प्रारम्भकिया (३६) तीन व्रतकरने के
पीछे चौथेही व्रतमें गर्भको धारण किया नव महीना

संख्येतुततःप्रसुषुवेसती ३७ दृष्ट्वासुतंहसन्त्य
द्वामातरंप्रोक्तवान्सुतः ॥ कुतोमातर्हसन्ती
त्वंदृष्ट्वामांशीघ्रजातकम् ३८ मातोवाचरुद
न्तंतंसुतंदृष्ट्वाप्रकोपितम् ॥ धन्योधन्योहि
मेदेवःकृपातोयस्यजायते ३९ त्वंमेपुत्राति
शीघ्रेणमयालब्धोनचान्यथा ॥ मातस्तवै
वचान्येषांयेकुर्वन्तिव्रतोत्तमम् ४० वत्सते
किंहिकार्य्यंमेवदस्वकथयामिभोः ॥ अहमेव

बीतनेपर पुत्रको भी उत्पन्न किया (३७) पुत्रको देखके
माता हँसनेलगी तब बालकने माता से कहा कि हे माता!
तू शीघ्रही उत्पन्नहुए मुझको देखके क्यों हँसती है (३८)
तब माताने क्रुद्धत और रोतेहुए बालकको देखके कहा
कि धन्य मेरा देवता है जिसकी कृपासे तुम उत्पन्नहुए
(३९) हे पुत्र!और कोई कारण हँसनेका नहींहै जग-
न्नाथहीजीके व्रतसे तुमको शीघ्रही प्राप्तहुई हूं तब बालक
ने कहा कि हे माता!जो कोई उत्तम व्रतकरैं उन सबको
फल मिलेगा या तुम्हींको मिलाहै (४०) तब माताने
कहा कि हे पुत्र!क्या तुम्हारे भी करनेकी इच्छा है सो
कहो मैं तुमसे सब कहती हूं तब बालक ने कहा कि मैं

करिष्यामियेनराज्यंलभेप्रभोः ४१ मान
सिकंततोबालोव्रतंकुर्य्याज्जगत्प्रभोः ॥ एकं
द्विकंत्रिकंकृत्वाचतुर्थेभूपतेःपुनः ४२ तदारा
ज्ञोभवेन्नष्टोदेहोलोकमुखाच्छ्रुतः ॥ राज्ञाज्ञ
प्ताःप्रधावन्ति मन्त्रिणोराज्यकोविदाः ४३ इ
तस्ततःप्रधावन्तोऽन्वेषयन्तिसुतानथ ॥ द
शाहाभ्यन्तरगतान्निर्द्दशांस्त्रिदशानपि४४द
दौराज्ञेप्रसन्नासाराज्ञीभवतितत्क्षणात् ॥ नृ
पानाहूयदेशस्थान्सर्वाञ्छत्रैकधारिणः ४५

स्वामीजी से राज्य मिलनेके लिये व्रत करूंगा (४१)
ऐसा कह बालकने जगन्नाथजी के चार मानसिक व्रत
किये चौथेही व्रतमें वहांका राजा (४२) मरगया तब
राज्यकार्यमें चतुर मन्त्रीलोग पहलेही से जो कि राजाके
आज्ञाकारी थे दौड़नेलगे (४३) इधर उधर दशदिन
के भीतर के उत्पन्न या कुछदिन न्यूनाधिक के बालकों
को ढूंढ़ते भये (४४) तब प्रसन्नहोके उसी स्त्रीने अपने
पुत्रको कि जिसने मानसिक स्वामीजीका व्रत कियाथा
देदिया तब मंत्रियों ने उस स्त्री को तो रानी करदिया
और देशदेशके छत्रधारी राजाओंको बुलाभेजा (४५)

तेषांपादांगुष्ठतला तिलकंसुतमस्तके ॥ कारयित्वाऽकरोद्राज्यममात्यैर्महिषीमुदा ४६ जगन्नाथस्यमाहात्म्यं वक्तुंनैवाशुशक्यते ॥ चैत्रेवैशाखमासेतु येकुर्वन्ति व्रतंविभोः ४७ इहलोकेसुखंभुक्त्वा जगन्नाथान्तिकंव्रजेत् ॥ धनार्थीलभतेलक्ष्मीं सुतार्थीसुतमाप्नुयात् ४८ विद्यार्थीलभतेविद्यां भार्य्यार्थीचोत्तमांवधूम् ॥ यद्यत्काम्यसुखंलोकेयद्यद्दिव्यंमहत्फलम् ४९ तत्सर्वंसमवाप्नोति जगन्नाथ

राजाओंसे उस बालकके मस्तकमें तिलककरा आनन्द से उसकी माता सहित बालकसे राज्यकार्य कराने लगे (४६) यह जगन्नाथजी का माहात्म्य है शीघ्र कहने में कोई समर्थ नहीं है चैत्र और वैशाख महीने में जे स्वामीजीके व्रतको करते हैं (४७) ते इसलोकमें सुख भोगकर मरने के पीछे जगन्नाथजीके समीप प्राप्तहोते हैं धनकी इच्छावाला लक्ष्मी और पुत्रकी इच्छावाला पुत्र को प्राप्त होताहै (४८) विद्यार्थी विद्या और स्त्रीकी कामनावाला उत्तम स्त्रीको प्राप्तहोता है जो जो सुख लोकमें अभीष्ट होते हैं (४९) तिनसबको जगन्नाथजी के व्रत

व्रतेकृते ॥ श्रुतंवाश्रावयेद्वापि यजेद्वायाजयेच्चयः ५० पुस्तकंपूजयेद्यश्च तस्येप्सितफलंभवेत् ॥ कावार्त्तापुत्रपौत्रादेः शौनकावोब्रवीम्यहम् ५१ येचैवंव्रतमुत्तमं विदधते स्वेष्टप्रदंभूतले विष्णोरद्भुतकर्मणोहरिहरब्रह्मादिदेवैर्नुतः ॥ तेसर्वैसकलंसुखंभुविजनाभुक्त्वाततस्स्वंपदं गच्छन्तेवनचान्यमात्रामितिकं सेवेतचान्यद्व्रतम् ५२ ॥

इति श्रीजगन्नाथमाहात्म्येपातालखण्डे ब्राह्मणदेहस्वर्णभूतशूद्रसुतराज्यप्रापकोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

इतिजगन्नाथमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

करने से प्राप्तहोताहै कथा को सुनै वा सुनावै पूजनकरे वा पूजनकरावै (५०) वा पुस्तकको पूजनकरे तिन सबको ईप्सितफल प्राप्त होते हैं सूतजी बोले कि हे शौनकादिको पुत्रपौत्रादिकोंके मिलनेकी तो वार्त्ताही क्या है क्योंकि सम्पूर्णही मनोवांछित फल प्राप्तहोते हैं (५१) जे पुरुष पृथ्वीतल में इष्टके देनेवाले महादेव ब्रह्मादिक

देवतोंसे स्तुति कियेहुए अद्भुतकर्मा विष्णुजी के उत्तम व्रतको करतेहैं ते पृथ्वीतलके भोग भोगके अन्त समय में अपने पदको प्राप्तहोतेहैं इसव्रतसे श्रेष्ठ कोई व्रत नहीं है कि जिसको सेवनकरैं इससे इसव्रतको कर अवश्यही जगन्नाथजीकी पूजन करनी चाहिये (५२)

इति श्रीजगन्नाथमाहात्म्येपातालखण्डेउन्नामप्रदेशान्तर्गततारगांवनिवासिपण्डितरामबिहारीसुकुलकृत भाषाटीकायांब्राह्मणदेहस्वर्णभूतशूद्रसुत राज्यप्रापकोनामचतुर्थोऽध्यायः४ ॥

इति जगन्नाथमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा जौलाई सन् १९०७ ई० ॥

रघुवंशभाषाटीकासहित ॥

जिसके मूल श्लोकों को कालिदास कबि और भाषाटीका को राजा लक्ष्मण सिंह साहब बहादुर डिप्टीकलक्टर बुलन्दशहर ने किया यह ऐसे कबि हैं कि इनकी कीर्त्ति हिन्दुस्तान से विलायततक है जिसमें राजा दिलीपका सन्तान न होने से रानी समेत वशिष्ठजी के आश्रमपर जाकर सुरभी की पूजाका उपदेश पा रानी समेत नन्दिनी गौकी सेवाकर राजाका २१ दिन गौको वनमें चराना और गौके मायासे उपजे हुये सिंहसे बचाकर दूध और पुत्र होनेका वरदान पाना फिर दिलीप से रघुकाहोना दिलीप का निन्नानवे अश्वमेध यज्ञ करना और सौवें यज्ञ में इन्द्र का घोड़ा हरलेजाने में रघु और इन्द्रसे घोरयुद्ध होकर इन्द्रसे सौवें यज्ञके फलपाने का वरदान पाना फिर रघुसे अज अजसे दशरथ दशरथ से रामचन्द्रादि चारों भाइयोंकी सम्पूर्ण कथा इत्यादि अनेक चरित्र १६ सर्गों में वर्णित हैं ॥

कुमारसम्भवभाषाटीकासहित ॥

मूल महाकवि कालिदासकृत, टीका भाषा पण्डित कालीचरणजी कृत—इसके सातसर्ग का प्रत्यक्षर का भाषा में तिलकहुआ कोई अक्षर छूटने नहीं पाया जिससे कम पढ़ेहुये मनुष्य भी सहज में अर्थ निकाल सक्ते हैं जिसमें पार्वतीजी की उत्पत्ति, ब्रह्माजीका तारकासुरसे क्लेशित देवोंको शिक्षा, मदनदहन, रतिविलाप, पार्वतीजी के तपका, उदय, शिवजीका पार्वतीसे विवाह करने के निमित्त हिमवान् के पास सप्तऋषियों को भेजकर बिवाह का निश्चय और शिव पार्वतीजीका बिवाह विधिपूर्वक वर्णन किया है ॥

इश्तिहार

श्रीद्वारकाश्रमयात्रादर्पण मुजल्लिद, क़ी० ।॥)पु०

श्रीपरमहंस बाबादूधदासजीकृत जिसमें द्वारका के प्रसिद्ध तीर्थस्थान व देवमन्दिर, सर, सरिता, पर्वतादि जो यात्रा में मिलते हैं सबका हाल विस्तारपूर्वक है काग़ज़ सफ़ेद ॥

श्रीसेतुबन्धाश्रमयात्रादर्पण, क़ीमत ।॥) पुख़्ता

श्रीपरमहंस दूधदासकृत-जिसमें सेतुबन्ध रामेश्वर के समीप के स्थान व तीर्थ व मन्दिर, सर, सरिता, पर्वतादि जो यात्रा में मिलते हैं सब का हाल विस्तार से लिखा है मय जिल्द इसमें भी नक़्शा शामिल है काग़ज़ सफ़ेद ॥

व्रतार्कभाषाटीकासहित, क़ीमत ।॥≈)

इसमें हरितालिका ऋषिपंचमी इत्यादि बहुत से व्रतों की कथा और उद्यापन की विधि इत्यादि मनोहर श्लोकों में वर्णित हैं इसका भाषाटीका पं० महेशदत्त तेवारी ने किया है ॥

व्रतार्कबातर्जुमाउर्दू, क़ीमत १।)

इसका उल्था लालास्वामीदयाल साहबने किया है छापा पत्थर क़ाग़ज़ सफ़ेद गुन्दा हैं इसमें सम्पूर्ण व्रतों की कथा व उद्यापन इत्यादि वर्णित हैं ॥